॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति *(यजु० ३१/१८)*

उसी परमात्मा को जानकर ही जीवात्मा मृत्यु से पार हो जाता है।

वर्ष ३२, अंक ३० एक प्रति : ३ रुपये
सोमवार २७ जुलाई, २००९ से २ अगस्त, २००९ तक
विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये
फैक्स : २३३४३७३७ ई–मेल : aryasabha@yahoo.com
Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं १ से १० तक

टीवी चैनलों को खुला छोड़ना समाज के लिए घातक होगा

"सच का सामना" जैसे कार्यक्रम युवा पीढ़ी को बरबादी की ओर लेकर जाएंगे

आर्यसमाज का सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्रीमती अम्बिका सोनी को कड़ा पत्र : शीघ्र कड़े फैसले ले भारत सरकार

समाज में टीवी चैनलों की आई बाढ़ से तथा उनमें आपसी प्रतियोगिता के कारण समाज पंगु–सा बनकर रह गया है। यदि इस प्रकार टीवी चैनल्स को पूरी तरह खुला छोड़ दिया गया और उन पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया तो यह समाज के लिए एक घातक कदम होगा।

अभी हाल ही में "सच का सामना", "इस जंगल से मुझे बचाओ" आदि धारावाहिकों ने समाज में एक ऐसा विष घोलना आरम्भ किया है, जो निश्चित रूप से युवा पीढ़ी को तथा इस समाज को बरबादी की ओर लेकर जाएगा। सरकार केवल यह कहकर अपनी जिम्मेदारियों से नहीं बच सकती कि चैनल खुद अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को समझें। इसलिए सरकार को तत्काल कदम उठाते हुए शीघ्र इसके लिए आवश्यक कानून एवं कोई नीति बनानी पड़ेगी ताकि इन घातक कार्यक्रमों से होने वाली हानियों से समाज को बचाया जा सके। ये विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्रीमती अम्बिका सोनी को लिखे पत्र में कही। सभा की ओर से उनसे विशेष अपील भी की गई कि वे इस विषय की गम्भीरता को समझते हुए शीघ्रातिशीघ्र तात्कालिक एवं आवश्यक कदम उठाएं ताकि निजी टीवी चैनल्स को यह एहसास हो कि उनके ऊपर भी कोई है, जो अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति सजग है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा भारत के प्रत्येक नागरिक से अपील भी करती है कि इस प्रकार के घातक कार्यक्रमों के प्रति विरोध का सामाजिक माहौल पैदा करें तथा पत्रों द्वारा अपनी बात भारत के प्रधानमन्त्री, माननीया राष्ट्रपति महोदया तथा सूचना प्रसारण मन्त्री के साथ–साथ इन कार्यक्रमों के प्रायोजक तथा अतिथि की भूमिका में आने वाले अभिनेताओं को भी अपना विरोध दर्ज कराएं ताकि एक माहौल इन सबके खिलाफ तैयार किया जा सके।

– महामन्त्री

जामिया मिलिया इस्लामिया में होगा वेद प्रचार

दिल्ली बुक फैस्टिवल

शनिवार 1 अगस्त से शनिवार 8 अगस्त, 2009

जैसा कि सभा की नीति रही है, सार्वजनिक मेलों में अधिक से अधिक प्रचार किया जाए। इसी के अन्तर्गत सभा निम्न आयोजन करने जा रही है। हमारा उद्देश्य है अधिक से अधिक नए महानुभावों तक आर्यसमाज के साहित्य को पहुंचाया जाए। इस स्टाल पर चारों वेद, महर्षि दयानन्दकृत साहित्य, विभिन्न भाषाओं के सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य वैदिक साहित्य प्रचारार्थ विशेष छूट के साथ रखा जाएगा। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर इस कार्य में सम्बल प्रदान करें। हॉल एवं स्टाल नं. अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। इस कार्य में जो स्वयंसेवी कार्यकर्ता सहयोग देना चाहें उनका हार्दिक स्वागत है। समयदानी कार्यकर्ता श्री सुखवीर सिंह आर्य 9350502175, रमेशचन्द्र आर्य (9868242404) से सम्पर्क करें।

– **ब्र. राजसिंह आर्य**, प्रधान **विनय आर्य**, महामन्त्री **अनिल तनेजा**, कोषाध्यक्ष

योजनाबद्ध रूप से आर्यवीर दल के कार्यों को गतिमान करने वाला अग्रणी राज्य बना दिल्ली

श्री वीरेन्द्र आर्य पुनः तीन वर्ष के लिए संचालक नियुक्त

आर्यसमाज की वर्तमान आवशकताओं में सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है– आर्यसमाज में युवाओं का प्रवेश। इसी आवश्यकता को देखते हुए आर्यसमाज के आरम्भिक कर्णधारों ने 'आर्य वीर दल' की स्थापना की थी। आर्य वीर दल अपने स्थापना काल से ही आर्यसमाज में युवा शक्ति के संचार हेतु संकल्पबद्ध था तथा गत 80 वर्षों में आर्य वीर दल का लाभ भी आर्यसमाज को पूर्णरूपेण प्राप्त हुआ है। दिल्ली जैसे राज्य में युवाओं को सेवा कार्यों की ओर आकर्षित करना निश्चित ही श्रमसाध्य कार्य है। पर निरन्तर योजनाबद्ध रूप से कार्य करने के कारण आज दिल्ली में आर्यवीर दल एक सुगठित इकाई के रूप में कार्यरत है तथा निरन्तर अपने उद्देश्यों तथा कार्यों के प्रति समर्पित है। गत लगभग 20 वर्षों में आर्यसमाज का कोई विशाल कार्यक्रम ऐसा नहीं रहा, जिसमें आर्यवीर दल दिल्ली का विशेष सहयोग न रहा हो। राष्ट्रीय आपदाओं के समय, चाहे वह भारत के किसी भी प्रान्त में हो, उसके कार्यों को आगे बढ़ाने का श्रेय आर्य वीर दल दिल्ली के आर्यवीरों को ही रहा। दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों में लगने वाली आर्यवीर दल शाखाएं निरन्तर ऊँचाइयों को प्राप्त कर रही हैं।

– शेष समाचार, चित्र एवं अधिवेशन की कार्यवाही पृष्ठ 10 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आवश्यक क्षेत्रीय बैठकें विस्तृत सूचना पृष्ठ 8 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग के तत्त्वावधान में

पुरोहितों एवं आचार्यों की अत्यावश्यक बैठक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग के तत्त्वावधान में दिल्ली समस्त आर्यसमाजों के पुरोहितों/धर्माचार्यों की एक अत्यावश्यक **बैठक आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 में रविवार दिनांक 16 अगस्त, 2009 को सायं 4.00 बजे** पुरोहितों के आपसी परिचय एवं उनके बीच तालमेल स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित की गई है।

अतः दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों में सेवाएं दे रहे पुरोहितों/धमाचार्यों से निवेदन है कि अपने कीमती समय में से कुछ समय अवश्य ही निकालकर इस बैठक में पधारें तथा अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराएं, ताकि भावी दिशा–निर्देश बनाते समय इन पर विशेष रूप से ध्यान दिया जा सके। इसके साथ ही आपसे अन्य निवेदन यह है कि आप अपना सम्पूर्ण विवरण (नाम, योग्यता, मोबाइल, कार्यानुभव, आपके द्वारा सम्पन्न विशिष्ट कार्य, आपकी विशेष योग्यता...., आदि) सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

–: निवेदक :–

ब. राजसिंह आर्य	**विनय आर्य**	**आचार्य खुशीराम**
सभा प्रधान	महामन्त्री	अधिष्ठाता, वेद प्रचार विभाग

दर्शन व्याख्या - 13

न्याय दर्शन के प्रथम अध्याय का परिचय

गतांक से आगे :–

8. तर्क : तत्त्वज्ञान अर्थात् विषय के यथार्थज्ञान या विषय के सम्यक् प्रतिपादन के लिए जिस युक्ति का सहारा लिया जाता है उसे तर्क कहते हैं। तर्क के पाँच प्रकार हैं –1. आत्माश्रय 2. अन्योन्याश्रय 3. चक्रिकाश्रय 4. अनवस्था और 5. तदन्यबाधता प्रसंग। (देखिएः न्याय०1/1/40 पर स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का भाष्य, पृ024–25)

9. निर्णयः निर्णय का अर्थ है किसी विषय का निर्भ्रान्त और सुनिश्चित ज्ञान। न्याय दर्शन के अनुसार पक्ष –प्रतिपक्ष का विमर्श करने के उपरान्त किसी सुनिश्चित अवधारणा पर पहुंचाने को निर्णय कहते हैं। ('विमृश्य पक्ष प्रतिपक्षाभ्यामर्थावधारणं निर्णयः' न्याय० 1/1/41) अपने विषय की सिद्धि के लिए प्रमाण प्रस्तुत कर प्रतिपक्षी के तर्कों का सयौक्तिक खण्डन कर जिस निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है, उसे निर्णय कहते हैं।

10. वादः 'न्यायदर्शन' के प्रथम अध्याय का प्रथम आह्निक 'निर्णय' के विवेचन पर समाप्त होता है और द्वितीय आह्निक का प्रारंभ 'वाद' के विवेचन से होता है। जहां विवेच्य विषय के यथार्य स्वरूप को जानने के लिए दोनों पक्ष अपने अपने तर्क और प्रमाण प्रस्तुत करते हैं तथा एक दूसरे के मन्तव्यों को प्रमाण और तर्कों से काटते हैं एवं विना किसी पूर्वाग्रह के सत्य को सहर्ष स्वीकार कर लेते है, उसे 'वाद'कहते हैं। स्पष्ट शब्दों में 'वाद' का उद्देश्य है विवेच्य विषय के यथार्थ ज्ञान को प्राप्त करना। 'वाद' में दोनों पक्षों की चर्चा सम्बद्ध विषय पर केन्द्रित होनी चाहिए तथा तर्क, प्रमाण, युक्तियाँ आदि भी प्रेमपूर्वक होनी चाहिए। 'वाद' विषयक 'न्यायदर्शन' का सूत्र इस प्रकार है–'प्रमाण–तर्क' साधनोपालम्भः सिद्धांतविरुद्धः पाञ्चावयवोपपन्नः पक्ष प्रतिपक्ष परिग्रहो वादः।'(न्याय०1/2/1/42)

11. जल्पः 'यथोक्तोपपन्नश्छलजातिनिग्रहस्थानसाधनोपालम्भो जल्पः।' (न्याय0 1–2–2–43) अर्थात् 'प्रमाण, तर्कादि साधनों से युक्त छल,जाति और निग्रहस्थानों के आक्षेप से वाद करने का नाम जल्प है।' जहाँ वाद का उद्देश्य जय–पराजय न होकर सत्यासत्य का निर्णय होता है, वहाँ जल्प का उद्देश्य एक–दूसरे को पराजित करना होता है, इसीलिए इसमें कहीं छल का प्रयोग किया जाता है तो कहीं निग्रह स्थानों पर विवाद किया जाता है।

12. वितण्डाः पक्षी –प्रतिपक्षी जब इस प्रकार विवाद करें कि अपनी मान्यता (सिद्धांत) को सिद्ध करने के लिए तर्क–प्रमाणादि न देकर केवल एक दूसरे को पराजित करने का प्रयत्न करें तो उसे वितण्डा कहते हैं – 'स प्रतिपक्षस्थापना हीनो वितण्डा।' (न्याय० 1/2/3/44) वितण्डा का उद्देश्य एक–दूसरे को पराजित करना है, सत्य को सिद्ध या स्वीकार करना नहीं।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्),
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058 क्रमशः

Questions & Answers

Law of Karma

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

Q.: As per Mahabharat Ram and Krishna are avatars of Narayan (Vishnu). Since Mahabharat was written by Muni Vyas. Did Vyas Muni tell lie in Mahabharat? Similarly Muni Valmiki also states Ram as avatar in Ramayan? ***Mahesh***

Ans. No please. The true shlokas of Mahabhart written by Vyas Muniji are only ten thousand in number where in avatarwad has not mentioned. Nowadays the number of the shlokas are more than about one lakh twenty thousand. There is a statement by King Bhoj in his book "Sanjeevini" about which Maharishi Dayanand Sarswati too sataes: Vyasji wrote 4400 shlokas of Mahabharat to which another 5,600 authentic shlokas were added by the disciples of Vyasji. During the reign of Maharaja Vikramaditya another 20,000 shlokas were added . Further Maharaja Bhoj says that during the reign of his father 25,000 and during half of his life time 30,000 more shlokas have been added to the Mahabharat book. If this process of addition of shlokas continues then the time is not far when Mahabharat book would have to be compared to the burden loaded on camel." There have been false additions to Mahabharat epic from time to time. Regarding this Kashinath Rajvada writes: "The present Mahabharat is corrupt and enlarged edition of the ancient Mahabharat.

To be continued....

देववाणी : संस्कृत

सर्वचिकित्सापद्धतीनाम् आयुर्वेदत्वम्

गत अंकेन क्रमशः

अस्यायमर्थः– शरीरस्य, इन्द्रियाणां मनसः आत्मनः च संयोग, नित्यग, अनुबन्धः "आयुः" इत्युच्यते। धारि, जीवितं च तस्यैव पर्यायः इति।

तस्य आयुर्वेदस्य माहात्म्यं पश्यन्तु सर्वे जनाः लोकयोरुभयोर्हितम् अर्थात् संसारे (इहलोके) परलोके च तद् हितं हितकरं वास्ति।

अतो वयं ब्रूमः संसारस्य सर्वप्राचीनो ग्रन्थः ऋग्वेदः, ऋग्वेदस्य किंवा अथर्ववेदस्य उपवेदः आयुर्वेदः। "कारणगुणपूर्वकः कार्यगुणो दृष्टः" इति न्यायेन आयुर्वेदस्यापि प्राचीनता ग्रन्थाकारेण न स्याच्चेदपि विचाररूपेण सिद्धान्तरूपेण आसीत् इति सुतरां सिद्ध्यति। यथा च वेदानां प्रचारः प्रसारः विश्वे बहुषु देशषु महर्षिभिः लोककल्याणकामैः यत्र तत्र कृतः शिलालेखादिषु इतिहाससाधनेषु लभ्यते। तद्वत् आयुर्वेदस्यापि प्रचारः प्रसारः व्यवहारः च आसीद् इति न प्रतिवादाय।

संसारस्य इतरचिकित्सापद्धतयः इहलोकायैव यतन्ते किन्तु धन्योऽयमायुर्वेदः यः न केवलमैहिकम् अपितु पारत्रिकमपि सुखं कल्याणं हितं च चिन्तयति। अनेन सिद्धमेतत् यत् अन्यत्र नास्तिकमतप्रभावेण आयुर्वेदस्य मोक्षाध्ययनभागः परित्यक्तः। मांसाहारादि सुरापानादि कुकर्माणि च मोहादेव तैर्गृहीतानि इति प्रतिभाति सम्भवोऽस्माकम्।

संसारे नानाचिकित्सापद्धतयः वर्त्तमाने प्रचलिताः नानाग्रन्थाश्च। तद्यथा–सुमेरी चिकित्सापद्धतिः, बै खिलोनी चिकित्सापद्धतिः, आसुरी चिकित्सापद्धतिः, मिस्री चिकित्सापद्धतिः, मैक्सिकी चिकित्सापद्धतिः, पेरूवी चिकित्सापद्धतिः, चीनी चिकित्सापद्धतिः, चीनी चिकित्सापद्धतिः, फारसी चिकित्सापद्धतिः, यूनानी चिकित्सापद्धतिः, रोमन चिकित्सापद्धतिः, अरबी चिकित्सापद्धतिः इत्यादयः।

आसु सर्वासु चिकित्सापद्धतीषु आयुर्वेदस्य सार्वभौमः प्रभाव दृष्टिगोचरः भवति। संसारे पुराकाले दैवव्यपाश्रय चिकित्सा प्रचलति स्म। पश्चात् युक्तिव्यपाश्रय चिकित्सायाः उदयः संजातः। आयुर्वेदे एते चिकित्सापद्धती स्पष्टतः व्याख्यायेते। अपि च तृतीयः सत्वावजयः चिकित्सा। तत्र –

1– दैवव्यपाश्रयम् – मन्त्रोषधिमणिमंगलबल्युपहारहोमनियम प्रायश्चित्तोपवासस्वस्त्ययन प्रणिपातगमनादि।

2– युक्तिव्यपाश्रयम्– पुनराहारौषधद्रव्याणां योजना।

3– सत्त्वावजयः – पुनरहितेभ्योऽर्थेभ्यो मनोनिग्रहः। (चरक 1/11/54)

1– दैवव्यपाश्रयचिकित्सा अर्थात् मन्त्रचिकित्सा, ओषधिचिकित्सा, मणिचिकित्सा, मंगलबलिचिकित्सा (बलिवैश्वदेवचिकित्सा) होमचिकित्सा, नियमचिकित्सा, प्रायश्चित्तचिकित्सा, उपसासचिकित्सा, स्वस्तिचिकित्सा (टेलीपैथी), वाचनचिकित्सा, उपासनाचिकित्सा, इत्यादयः दैवव्यपाश्रयचिकित्सारूपेण स्वीक्रियन्ते।

2– युक्तिव्यपश्रयचिकित्सा – आहारचिकित्सा औषधचिकित्सा च युक्तिव्यपाश्रये भवति।

– सुदर्शन 'व्रती', प्राध्यापक,
महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम, आमसेना (उड़ीसा) क्रमशः

बोध कथा

जोंक और मनुष्य में समानता

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

मैं छोटा–सा था। एक गाय थी हमारे घर में । पिता जी ने कहा –"जा उसे घुमा ला। पानी पिला ला।"

हमारे गांव के पास एक तालाब था। शायद उसे 'मुसद्दीवाना' कहते थे। गाय उसके किनारे–किनारे घूमने लगी। मैं कुछ दूर जाकर खेलता रहा। कुछ देर बाद गाय को लेने आया तो देखा कि उसके साथ चार–पाँच जोंकें चिपटी हुई हैं– बहुत फूली हूई, मोटी बनी हुई। मैं बड़ा घबराया कि अब पिताजी मारेंगे। रोता–रोता उनके पास पहुँचा। उन्होंने पूछा – "रोता क्यों है?"

मैंने कहा– "ये जोंकें सारा दूध पी गई। अब गाय दूध कैसे देगी?"

पिता जी ने हँसते हुए कहा– "घबराओ नही, ये जोंकें हैं। ये दूध नहीं पीतीं, ये रुधिर पीती हैं।"

हाय रे दुर्भाग्य! दूध–जैसी अमृत वस्तु के पास पहुँचकर भी अभागी जोंकों को दूध पीने की नहीं सूझती, केवल रुधिर–पान करती रहीं। किन्तु केवल वे जोंकें ही तो अभागी नहीं। प्रत्येक मनुष्य अभागा है, जोंक की भांति उसे केवल मैला रुधिर मिलता है। ऐसे मनुष्य से कहता हूँ– "अपने लिए दुर्भाग्य पैदा मत कर ! बछड़ा बन, जोंक न बन! अमृत भरा दूध पी, रुधिर पान न कर !"

आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में मुख्यमन्त्री हरियाणा ने गुरुकुल और संस्कृत सम्बन्धी सभी मांगें स्वीकार की

गुरुकुलों को मिला जीवनदान और वरदान

संस्कृत का स्थान और ऊंचा होगा – भूपेन्द्र सिंह हुड्डा

पिछली सरकारों के कार्यकाल से उठाई जा रही गुरुकुल संघ और संस्कृत अध्यापक संघ की सभी मांगों को उदारतापूर्वक स्वीकार करके हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा ने संस्कृत जगत् में अपना नाम अविस्मरणीय बना लिया है। गुरुकुल संघ के इतिहास में तो उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जएगा क्योंकि उन्होंने गुरुकुल की परीक्षाओं की हरियाणा की सरकारी सेवा के लिए मान्यता और समकक्षता स्वीकार कर ली है। गुरुकुलों के लिए यह मांग सर्वाधिक वांछनीय और कठिन थी जिसका कानूनी समाधान मुख्यमंत्री ने रुचि लेकर पहले ही निवेदन पर कर दिया। इसके अतिरिक्त सौ विद्यार्थियों के अनुपात पर डेढ़ लाख दो सौ पर अढ़ाई लाख और तीन सौ पर तीन लाख रुपये वार्षिक अनुदान राशि भी सभी गुरुकुलों के लिए स्वीकृत की है। गुरुकुल की परीक्षाओं की हरियाणा शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता की प्रक्रिया आरम्भ हो गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि गुरुकुल 'मूल भाषा संस्कृत' और 'भारतीय संस्कृति' के आदर्श केन्द्र हैं, जो हमारे लिए गर्व के स्थान हैं, अतः हमारी सरकार गुरुकलों के सहयोग और सहायता के लिए कृत–संकल्प है। इन मांगों को स्वीकार कर मुख्यमंत्री महोदय ने गुरुकुलों को मानो जीवनदान के साथ वरदान भी दे दिया है।

संस्कृत अध्यापक संघ की ओर से प्रस्तुत मांगों में से इस मांग को अगले वर्ष से स्वीकार कर लिया गया कि विद्यार्थी छठे पेपर में (अनिवार्य पांच विषयों के अतिरिक्त) अपनी पसन्द का विषय पढ़ेंगे और सर्वाधिक अंकवाले पांच विषयों के अंक अंकपत्र में मैरिट के लिए जोड़े जाएंगे। क्योंकि छठे पेपर के रूप में अधिकांश विद्यार्थी संस्कृत को पढ़ना पसन्द करते हैं, अतः इससे संस्कृत को सीधा लाभ होगा। यह मांग भी स्वीकार की गई कि 'दस जमा दो' कक्षाओं में जिस भी स्कूल में जिस कक्षा में बीस छात्र संस्कृत पढ़ना चाहेंगे उन्हें एक मास में प्राध्यापक उपलब्ध करा दिया जाएगा। संस्कृत अध्यापकों की पदोन्नति बारे कोर्ट का निर्णय प्रतीक्षित है, उसको स्वीकार कर क्रियान्वित किया जाएगा। मुख्यमंत्री के ध्यान में यह बिन्दु भी लाया गया कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक ने कुछ महाविद्यालयों से संस्कृत विषय को हटा दिया है। मुख्य मंत्री ने इस पर आदेश दिया कि ऐसा नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे पूर्वस्थिति बनाये रखने के लिए महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक को तुरन्त लिखें। इनके साथ कुछ छुट–पुट मांगों पर भी मुख्यमन्त्री ने सकारात्मक रुख प्रदर्शित किया। सभी मांगें स्वीकार किये जाने के उपरान्त गुरुकुल संघ और संस्कृत अध्यापक संघ ने मुख्यमन्त्री महोदय, शिक्षामंत्री महोदय, डॉ. राम प्रकाश एम. पी. (कुरुक्षेत्र) तथा शिक्षा विभाग के अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस कार्य में डॉ. राम प्रकाश जी एम.पी. का सतत

आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में दिए गए थे सैंकड़ो जगह धरने

सहयोग बढ़ चढ़ कर रहा है। यदि इनका हार्दिक सहयोग न होता तो सफलता संदेहास्पद बनी रहती।

मांगों की स्वीकृति की घोषणा दिनांक 26.06.2009 को मुख्यमंत्री कार्यालय चंडीगढ़ में सम्पन्न हुई एक संयुक्त बैठक में की गई। यह बैठक मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें शिक्षामंत्री हरियाणा श्री मांगेराम गुप्ता, डॉ. राम प्रकाश एम.पी. मुख्यमंत्री के प्रमुख कार्यकारी अधिकारी श्री तायल, शिक्षा सचिव और कमिश्नर श्री राजन गुप्ता उच्चतर शिक्षा कमिश्नर श्रीमती

आर्यसमाज द्वारा चलाए गए आन्दोलन रंग लाया

सिवाच, सैकेण्डरी शिक्षा कमिश्नर श्री अनुराग रस्तोगी आदि अधिकारी उपस्थित थे। प्रतिनिधि मंडल आचार्य बलदेव जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के नेतृत्व में मिला था। जिसमें आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर, डॉ. सुरेन्द्र कुमार पूर्व प्राचार्य गुड़गांव, विरजानन्द दैवकरणि, डॉ. सुरेन्द्र कुमार प्रोफेसर (संस्कृत), श्याम कुमार शर्मा प्रधान, सत्यव्रत शास्त्री तथा रामफल शास्त्री सदस्य के रूप में सम्मिलित थे।

संस्कृत सम्बन्धी समस्याओं का आरम्भ तब हुआ जब कुछ वर्ष पूर्व नई शिक्षानीति की आड़ में हरियाणा सरकार ने त्रिभाषा अध्ययन का छठा पत्र महत्त्वहीन कर दिया। सरकार ने यह निर्णय घोषित किया कि उसके अंक जोड़े नहीं जाएंगे। संस्कृत अध्यापकों के साथ पक्षपातपूर्ण नीति पहले से ही चली आ रही थी। सभी मांगों को लेकर संस्कृत प्रेमी आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में मुख्यमंत्री से कई बार मिले। दिनांक 25.12.2007 को गुरुकुल झज्जर के प्रांगण में हरियाणा भर के संस्कृत प्रेमियों की एक ऐतिहासिक विशाल जन सभा हुई जिसमें मुख्यमंत्री ने कुछ मांगों को स्वीकार करने की घोषणा की। संघ के अनुसार, शिक्षा विभाग के अड़ियल और प्रतिकूल रवैये के कारण एक वर्ष तक मांगों पर कोई अमल नहीं हुआ। एक वर्ष के बाद पुनः चंडीगढ़ के मुख्यमंत्री कार्यालय में आचार्य बलदेवजी के नेतृत्व में 04.12.2008 को एक प्रतिनिधि मण्डल मुख्यमंत्री महोदय से मिला। सभी शिक्षा अधिकारियों के साथ इसमें शिक्षा मंत्री हरियाण, डॉ. रामप्रकाश जी एम.पी., प्रो. वीरेन्द्र आदि भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कई मांगों को स्वीकार करने का तथा उनके शीघ्र क्रियान्वयन का आश्वासन पुनः दिया।

अब फिर मई 2009 का महीना आ गया था। अभी तक बीते छह महीनों में एक भी मांग पर अमल सामने नहीं आया था। इस विषय पर संस्कृत प्रेमियों में खुसफुसाहट चल ही रही थी कि शिक्षा विभाग के एक निर्णय ने जले पर नमक छिड़क दिया। दसवीं के छात्रों के अंकपत्र जारी कर दिये गये थे और उनमें संस्कृत आदि अध्ययन विषयक छठे पेपर के अंक नहीं जोड़े गये थे। संघ ने इसे विश्वासघात माना और सरकार के विरुद्ध संघर्ष की घोषणा आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में कर दी। दिनांक 28.05.2009 को सभी जिलों पर उपायुक्तों के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपे गये। दिनांक 11.06.09 से रोहतक उपायुक्त कार्यालय पर प्रतिदिन धरना देने की घोषणा हुई। उच्चतम तापमान की तपा देने वाली भयंकर गर्मी में संस्कृत प्रेमी जन प्रतिदिन दिन भर धरने पर बैठते थे। एक जिले के संस्कृत प्रेमी एक दिन धरने पर बैठते रहे। पुकार सुनी न जाती देख आचार्य बलदेव जी ने 24जून 2009 को गिरफ्तारी देने की घोषणा की। 24 जून को आचार्य जी के आह्वान पर हरियाना भर से सात –आठ हजार लोग जनसभा में उपस्थित हुए। जनसभा के बाद संस्कृत प्रेमियों ने स्वयं को गिरफ्तारी के लिए प्रस्तुत किया, किन्तु प्रशासन ने गिरफ्तार करने से इंकार कर दिया। प्रतिक्रिया स्वरूप दिल्ली हाइवे पर जाम लगा दिया जहां से लगभग दो हजार सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर पुलिस 'रोहतक की पुलिस लाइन' में ले गई। दो घंटे बाद पुलिस ने सबकी रिहाई की घोषणा कर दी किन्तु सत्याग्रहियों ने रिहा होने से मना कर दिया और पुलिस लाइन में ही धरना देकर बैठ गये। रोहतक के उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक ने भरसक प्रयास किया कि किसी प्रकार धरना समाप्त हो और सत्याग्रही चले जायें किन्तु सत्याग्रही भूखे–प्यासे होते हुए भी वहां अडिग रहे। मुख्यमंत्री ने बातचीत का निमन्त्रण भेजा और सभी मांगों पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया। तदनुसार रात दो बजे धरना उठाया गया। 25.06.2009 को हरियाणा भवन दिल्ली में प्रतिनिधि मंडल से मुख्यमंत्री का संवाद हुआ। पुनः 26.06.2009 को चंडीगढ़ में संयुक्त बैठक हुई जिसमें संस्कृत प्रेमियों को उक्त सफलता प्राप्त हुई।

– डॉ. सुरेन्द्र कुमार
गुड़गांव (हरियाणा)

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पादः (42)

उत्पत्त्यसंभवात्।।42।।

अर्थ – (उत्पत्ति असंभवात्) उत्पत्ति के असंभव होने से। अर्थात् ब्रह्म और जीवात्मा की उत्पत्ति किसी उपादान तत्त्व से संभव न होने से उन्हें किसी तत्त्व का परिणाम कहना युक्ति संगत नहीं।

भावार्थ– ब्रह्म द्वारा प्रकृति रूपी जड़ उपादान तत्व से जड़ जगत् परिणत किया जाता है। शास्त्रों में जगत् की उत्पत्ति का ऐसा ही वर्णन मिलता है। ब्रह्म सारे जगत् का नियन्ता है, अतः यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जैसे ब्रह्म प्रकृति रूपी उपादान तत्व से जगत् को परिणत करता है तो क्या ऐसे ही यह भी संभव है कि वह जीवात्माओं को भी किसी उपादान तत्व से परिणत करता हो? क्योंकि इस संसार में प्रत्येक शरीर में जीवात्मा नाम के तत्व का अनुभव होता है। इस लिए उसकी उत्पत्ति भी किसी न किसी तत्व से माननी चाहिए। सूत्रकार कहते हैं कि जीवात्मा की उत्पत्ति असंभव है क्योंकि जगत् में जो कुछ भी परिणत होने वाला है वह जड़ प्रकृति से होता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि जड़ का परिणाम जड़ ही हो सकता है, चेतन नहीं। जीवात्मा चेतन है जड़ नहीं। चेतन तत्व न तो किसी का कार्य होता है और न उपादान। अतः जीवात्मा को चेतन मानने पर न तो वह किसी का कार्य होगा और न वह किसी का उपादान हो सकता है। चलो, हम चेतन जीवात्मा को जड़ प्रकृति का परिणाम नहीं मानते तो चेतन ब्रह्म को ही उसका उपादान क्यों न मान लें? परन्तु सूत्र में दिए असंभव हेतु से इस संभावना का पूरी तरह निराकरण हो जाता है। इस हेतु को देने का यही कारण है कि चेतन तत्व न किसी का उपादान होता है, न कार्य। इसलिए चेतन जीवात्मा की उत्पति की कोई संभावना नहीं है। ब्रह्म की उत्पत्ति का शास्त्रों में निषेध है। यदि वह शरीरी और इंद्रियों वाला होता तो उसकी उत्पत्ति मानी जा सकती थी, परन्तु ऐसी बात नहीं है। इसलिए ईश्वर की उत्पत्ति असंभव है क्योंकि वह शरीर वाला और इंद्रियों से युक्त नहीं है।

ब्रह्म को जीवात्माओं का नियन्ता कहा है, क्योंकि वह जीवों के कर्मफलों की व्यवस्था का नियामक है। जीवात्माओं का चरम लक्ष्य ब्रह्म के स्वरूप को जानकर आनन्द कि अनुभूति करना है। वह साधन के रूप में जीवात्मा के लिए जगत् की उत्पत्ति करता है। इस स्थिति को ब्रह्म ही ला सकता है। यह जीवात्मा की सामर्थ्य से बाहर है। इस दृष्टि से संपूर्ण चेतन और अचेतन जगत् का नियंता ब्रह्म है, ऐसा ही शास्त्रों का कथन है। इससे यह स्पष्ट होता है पर ब्रह्म परमात्मा स्वयं जीवात्मा के रूप में यहाँ उपस्थित नहीं होता।

शिष्य पूछता है कि जीवात्मा को चेतन और उत्पन्न न होने वाला माना गया है, तो जिस प्रकार ब्रह्म को जगत् की रचना में किसी सहायक साधन की आवश्यकता नहीं होती, क्या उसी प्रकार चेतन जीवात्मा को भी अपने द्वारा किए जाने वाले कामों में किसी साधन की आवश्यकता नहीं होती? आचार्य सूत्रकार अगले सूत्र में इसका समाधान करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

श्रावणी उपाकर्म रक्षाबन्धन पर विशेष

श्रावणी पर्व एवं रक्षाबन्धन

भारत ऋषियों–मुनियों की धरती होने का गौरव रखता है। आदि सभ्यता की उद्गम स्थली होने का गौरव भी भारत को ही है। हमारे ऋषियों ने समय समय पर मानव को संस्कारित करते रहने के लिए, इन्हें अपना कर्तव्य बोध करवाने के लिए, कुछ सीखते रहने की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अनेक पर्वों, त्योहारों व उत्सवों की एक लड़ी सी बनाई है। इन उत्सवों को मनाने की एक नियमावलि जो हमारे ऋषियों ने दी है, उसके माध्यम से हम जाने में ही नहीं अनजाने व अनचाहे भी बहुत से उपकार, नवनिर्माण व धर्म के उत्थान के कार्य कर जाते हैं जो हमें अपने साधारण जीवन की दैनिक व्यस्तताओं की अवस्था में कर पाना सम्भव नहीं हो पाता। ऐसे ही पर्वों में श्रावणी उपाकर्म तथा रक्षाबन्धन भी एक है।

भारत में चोमासा के नाम से प्रसिद्ध चार महीने ऐसे होते हैं, जिन में वर्षा के कारण अनेक भूमिगत व जहरीले जीव भूमि से बाहर निकल आते हैं, इस अवस्था में सुरक्षा की दृष्टि से प्राचीन काल से ही ऋषिगण जंगलों से निकल कर नगरों में आकर किसी स्थान को केन्द्र बना कर आवास करते थे तथा अपने अनुभव, स्वाध्याय तथा परिश्रम से उन्होंने जो ईश्वरीय ज्ञान एकत्र किया होता है, उसे वह अपनी सेवा शुश्रूषा के बदले 'जन सामान्य' को बांट देते थे। आर्य समाज में भी यही परम्परा स्थापित करते हुए श्रावणी उपाकर्म का विधान किया गया है। इसे श्रावणी इसलिए कहा जाता है क्योंकि श्रावण माह भी इन्हीं चार महीनों में आता है। श्रावण महीना अत्यधिक वर्षा का महीना होता है। सभी जलाशय नदी नाले न केवल भरे ही होते हैं अपितु उफान पर होते हैं। ऐसे में सभी प्रकार के कार्य बाधित होते हैं, चाहे वह कृषि का क्षेत्र हो अथवा व्यापार का। अतःआर्य समाज ने इस महीने में यज्ञ हवन व वेद प्रचार की परम्परा स्थापित की है तथा प्रत्येक आर्य समाज में इन दिनों वेद प्रचार सप्ताह व कथा का आयोजन किया जाता है।

यह उल्लास का पर्व है। उल्लास एक ऐसी सगन्ध है जिस का जितना प्रयोग करो यह बढ़ती ही चला जाती है। यही कारण है कि ऋषियों ने जो सगन्ध वर्ष भर के प्रयास से एकत्र की होती है, इस पर्व पर वे इसे जन सामान्य में बांट देते हैं। यही कारण है कि यूनान, मिस्र जैसे राष्ट्रों के नष्ट होने पर भी सर्वाधिक प्राचीन यह भारत राष्ट्र आज भी न केवल जीवित है अपितु आज भी विश्व का एक बड़ा भाग इससे मार्ग दर्शन पा रहा है।

श्रावणी की पूर्णिमा वास्तव में ज्ञान की साधना का समय है। इस पर्व पर न

केवल हम आध्यात्मिक रूप से ही जागृत होते हैं अपितु आधि–भौतिक व आधिदैविक तापों से बचने के लिए भी कार्य व साधना करते हैं। इस महीने की पूर्णिमा को रक्षा बन्धन पर्व के रूप में भी मनाते हैं। यह प्रतिज्ञा का पर्व है। इस पर्व पर अपना यज्ञोपवीत स्नान करके बदलते हैं, जो हमारे तीन ऋणों की, तीन कर्तव्यों की पुनः स्मृति करवाता है। हम हवन करते हैं। इसी अवसर पर बहिनें अपने भाई की सुरक्षा की कामना करते हुए, ईश्वर से उस के दीर्घजीवी होने की प्रार्थना करते हुए अपने भाई की कलाई में राखी बांधती हैं, जिस की वर्ष भर भाई प्रतीक्षा कर रहा होता है। राखी के धागे के तारों का बन्धन कोई साधारण बन्धन नहीं होता। यह जीवन में एक प्रतिज्ञा धारण करने का, एक संकल्प लेने का क्षण होता है, जिस से भाई–बहिन का स्नेह बढ़ता है, उनकी यदि कोई कटुता रही हो तो वह कम होती है अथवा समाप्त हो जाती है और भविष्य में एक दूसरे की रक्षा करने का संकल्प लेते हैं।

आज रक्षाबन्धन का यह पर्व दूषित बन कर रह गया है, यह मात्र एक परिपाटी बन गया है। जिस पर्व में वैमनस्य समाप्त करना होता है, उस पर्व में बहिनें भाई से कुछ पैसे लेने की इच्छा रखती हैं, अनेक बहिनें तथा अनेक भाई बीती कटुता को याद करके समीप आने का अवसर खोने लगे हैं। सरकारी विधि विधान भी इस कटुता को बढ़ाने का कारण है। सरकार ने बाप की सम्पत्ति में बेटी को समान अधिकार दे कर भाई–बहिन में कटुता पैदा कर दी है, किन्तु अच्छी व समझदार बहिनों ने त्याग दिखाते हुए, इस कटुता को भाई–बहिन के बन्धन में नहीं आने दिया।

श्रावण महीने में एक लम्बा या यूं कहें की पूरा महीना जो यज्ञ किया जाता है यह पर्व उसकी पूर्णाहुति है। आषाढ़ मास की गुरु पूर्णिमा के माध्यम से हम अपनी आध्यात्मिक शक्ति को बढाने के लिए गुरु के प्रति आदर समर्पण करते हैं, उसी के परिणाम स्वरूप श्रावण महीने की पूर्णिमा पर गुरु ठीक उसी प्रकार हमें रक्षा प्रदान करता है, जिस प्रकार बहनें अपने भाईयों को राखी बांध कर प्राप्त करती हैं। यह वास्तव में गुरु से प्राप्त आशीर्वाद ही तो होता है। इस प्रकार तीनों ऋणों से उऋण होने के संकल्प के पश्चात् हम गुरु का सत्कार करते हैं, जिसके बदले में गुरु हमें आर्शीवाद स्वरूप तीन धागों का यह रक्षा कवच प्रदान करता है।

यह पर्व न केवल गुरु की ही अपितु आश्रम की भी सेवा व व्रतों व नियमों में रहने के साथ ही साथ शास्त्रों के अध्ययन का मार्ग भी देता है। यह पर्व हमें केवल तिथि विशेष से बन्ध कर ही नहीं अपितु जीवन का अंग बनाकर निरन्तर मनाते रहना चाहिये, क्योंकि यह एक व्रत है, जिसे पूर्ण करना हमारा कर्तव्य है। व्रत पूर्ति के लिए जीवन का कोई भी क्षण लगा सकते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस पर्व को वेद प्रचार व प्रसार का पर्व कहा है। महर्षि ने "वेद का पढना–पढ़ाना तथा सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म" माना है। अतः यह साधारण धर्म ही नहीं अपितु परम धर्म भी है कि श्रावणी उपाकर्म के अन्तर्गत हम वेदों का न केवल विशेष रूप से श्रवण ही करें बल्कि इन दिनों खूब स्वाध्याय करें। यदि हम श्रावणी पर स्वाध्याय करते हैं तो हम इस पर्व को पूर्णतया सार्थक कर रहे हैं। क्योंकि स्वाध्याय ही श्रावणी की सार्थकता है। अतः हम सभी मिल कर श्रावणी उपाकर्म के महत्त्व हो समझते हुए इस पर्व पर अवश्यम्भावी रूप से स्वाध्याय आरम्भ कर दें।

– डा. अशोक आर्य
116, मित्र विहार,
मण्डी डबवाली– 125104 (हरियाणा)

सत्यार्थ मुक्तक

सत्यार्थ प्रकाश से

"स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज दिखाई देती है। इसलिए वे केवल आर्यसमाजियों के लिए नहीं अपितु समग्र संसार के लिए पूजनीय हैं।" – कस्तूरबा गांधी

"जब पांच पांच वर्ष के लड़का लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। उसके पश्चात् जिनसे अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म, परमेश्वर (के मन्त्र श्लोक सूत्र, गद्य, पद्य और) माता, पिता, आचार्य, विद्वान्, अतिथि, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, बन्धु, भगिनी, भृत्य आदि से कैसे–कैसे वर्तना (व्यवहार करना) इन बातों के मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें।" ***(द्वितीय समुल्लास)***

"देखो! जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप–पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख दुःख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नश कर सकता है?" ***(द्वितीय समुल्लास)***

पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र में अपार सफलता के पश्चात् 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण दिल्ली में

सत्यार्थ प्रकाश प्रवचन माला का शुभारम्भ

आर्यसमाजें श्रावणी के अवसर पर लाभ उठाएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में सत्यार्थ प्रकाश प्रवचन के लिए आचार्य इन्द्रदेव जी, अधिष्ठाता वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली को नियुक्त किया है। अभी तक आचार्य इन्द्रदेवजी द्वारा पश्चिमी दिल्ली की 34 आर्य समाजों में सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम दस सम्मुल्लासों पर लगभग 51 प्रवचन दिए जा चुके हैं। आचार्य जी एक घण्टे के प्रवचन के पश्चात् शंका समाधान के लिए भी समय देते हैं। न्यूनतम एक एवं अधिकतम पांच प्रवचनों की अपने समाज में व्यवस्था करके सत्यार्थ प्रकाश को सरल रूप से विधि पूर्वक समझने का लाभ प्राप्त करें। दो घण्टे के कार्यक्रम में यज्ञ, भजन 45 मिनट एवं प्रवचन शंका समाधान के लिए एक घण्टा 15 मिनट का समय रख सकते हैं। अन्य व्यवस्थाओं के लिए आचार्य जी से सम्पर्क करें। उनका सम्पर्क सूत्र मो. 9211367978 है।

आचार्य इन्द्रदेव जी
अधिष्ठाता वेद प्रचार मण्डल
पश्चिमी दिल्ली

– विनय आर्य, महामंत्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. 9350204466, 9958174441

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 2009

सम्भवतः संसार का सबसे भव्य आर्यसमाज मन्दिर सूरीनाम में

प्रस्तुत लेख आगामी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सूरीनाम–2009 के सन्दर्भ में प्रकाशित किया जा रहा है ताकि समस्त आर्यजन सूरीनाम देश तथा वहां पर आर्य समाज की भूमिका के बारे में जान सकें। इस लेख के साथ जो चित्र दिया गया है वह वहां के भव्य आर्यसमाज मन्दिर का है, जो सम्भवतः संसार का सुन्दरतम आर्यसमाज मन्दिर होगा। प्रस्तुत लेख के लेखक पं. सूर्यप्रसाद बीरे जी हैं जो कि भारतीय मूल के हैं किन्तु कई पीढ़ियों पहले सूरीनाम के निवासी हो चुके थे और अपने पूरे परिवार के साथ अब वे हॉलैण्ड में बस चुके हैं। उनका सूरीनाम से गहरा सम्बन्ध अब भी जारी है। वे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन रोहिणी, शिकागो तथा मॉरीशस में प्रतिनिधि रह चुके हैं तथा सूरीनाम सम्मेलन में उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा 2010 के सम्मेलन जो कि हॉलैण्ड में होना है की तैयारियां उन्होंने अभी से आरम्भ कर दी हैं। हमारे निवेदन पर उन्होंने यह शृंखला लिखने की स्वीकृति दी है। – विनय आर्य, महामन्त्री

सूरीनाम में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 26, 27, 28 और 29 सितम्बर 2009 को सूरीराम की राजधानी पारामारीबों में सम्पन्न होने जा रहा है।

इस सम्मेलन का मुख्य विषय है : आर्यसमाज का तीसरा नियम ***"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"***

सूरीनाम का एक परिचय–

सूरीनाम दक्षिण अमेरिका के उत्तर में स्थित एक देश है, जिसकी राजधानी पारामारीबो है। इसके उत्तर में अटलान्टिक महासागर है, पूरब में फ्रैंच गयाना और पश्चिम में (ब्रिटिश) गयाना और दक्षिण में ब्राजील है। सूरीनाम की कुल आबादी लगभग पाँच लाख है। इस देश के मूल निवासी रेड इंडियन यानी भिलनी समुदाय है। कहा जाता है कि 'सूरीनाम' नाम भिलनियों के जो एक समूह का नाम "सूरीनन" था उसके कारण सूरीनाम नाम पड़ा।

यूरोप वालों के आने से पहले ये आदिवासी स्वतन्त्र रूप से देश के उत्तरी क्षेत्र में नदियों और समुद्री तट के आस पास रहते थे। खेती और शिकार इनका मुख्य कारोबार था। वे अभी तक तीर–बाण से शिकार करते हैं। यूरोपियन और अन्य विदेशियों के आने के कारण वे उत्तरी क्षेत्र को छोड़कर दक्षिण की ओर जा बसे, जहाँ घने जंगल है और सूरीनाम की नदियों का स्रोत है। यही कारण है कि उनकी भाषाओं में विदेशी भाषाओं का प्रभाव नहीं पड़ा।

सूरीनाम की प्राकृतिक सुषमा 'यहाँ के निवासियों का गौरव' और विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र रही है और इस

सौन्दर्य को संवारने में अन्य समुदायों के अतिरिक्त भारतवंशियों के श्रम की अहम भूमिका है। भारतवंशियों के अलावा सूरीनाम में रेड इंडियन, कियोल, बुश नीग्रो, जावानीश, इंडोनेशियन, चाइनीज, यूरोपीय और अमेरिकी लोग भी रहते हैं। यहाँ पर सरनामी हिन्दी समेत बीस भाषाएँ बोली जाती हैं।

आदिवासी :– सूरीनाम के आदिवासी रेड इंडियन अथवा अमर इंडियन है, जिन के बारे में कहा जाता है कि यह समुदाय, जिसको भिलनी भी कहा जाता है, सदियों पूर्व भारत में रहता था। इतिहास से पता चलता है कि यह समुदाय लगभग तीस हजार वर्ष पूर्व भारत से अमेरिका की तरफ चला गया था।

जो भिलनी के लोग सूरीनाम में बसे हुए हैं उन्हें प्रायः आठ हजार वर्ष हो गए हैं। इस समुदाय को दो भागों में बाँटा जा सकता है:–

एक भाग है खेतिहर है। दूसरा भाग है शिकारी। इनके स्थानों के नामों में ऐसे शब्द मिलते हैं जो संस्कृत और हिन्दी शब्दों से मिलते जुलते हैं। जैसे :–

माता पिका– एक वर्ण बदल देने से वह शब्द शुद्ध हिन्दी शब्द माता–पिता हो जाता है।

काशीपोरा– जो काशीपुर की तरह लगता है।

आपूरा– जो संस्कृत शब्द अपूर्ण जैसे अथवा हिन्दी के प्रसिद्ध शब्द अपूरा की तरह दीखता है।

परमरबो– जो परमभू जैसे लगता है।

पोत्रीबो– जो पुत्री भू या पुत्र भू जैसे ध्वनित होता है।

सूरीनाम की राजधानी के बारे में कहा जाता है कि पारामारीबो वास्तव में परमरबो नाम का अपभ्रंश शब्द है। जिसका अर्थ है फूलों का नगर या शहर। इन की भाषाओं में प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है। ये भाषाएँ केवल मौखिक रूप में प्रयोग की जाती हैं। सरकार की ओर से कभी कभी सूचनाएँ और समाचार अन्य भाषाओं की तरह रेडियो द्वारा दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त लोक गीतों के कार्यक्रम प्रस्तुत किऐ जाते हैं।

यूरोपियन :– सूरीनाम में यूरोपियन की सख्या अब लगभग 5000 है। गुलामी (दास) और शर्तबन्दी प्रथा के बाद ये लोग सूरीनाम छोड़कर अपने अपने देश चले गये। बहुत कम यूरोपियन सूरीनाम को अपनी मातृभूमि मानकर यहाँ बस गये। इन लोगों की संस्कृति एवं भाषा का प्रभाव सूरीनाम की सभी समुदायों की संस्कृति और उनकी मातृभाषाओं पर पड़ा।

विशेषकर देश की तीन मुख्य भाषाओं पर उनका प्रभाव अधिक रहा।

ये भाषाएँ हैं :– 1. स्रानांग, 2. सरनामी हिन्दी, 3. इंडोनेशियन।

– **शेष पृष्ठ 8 पर**

प्रचार यात्रा वृत्तान्त

डॉ. उत्तमायति जी की वेद प्रचार यात्रा – 7

दक्षिण अमेरिकी देश सूरीनाम की यात्रा

गतांक से आगे :–

सूरीनाम का आर्य दिवाकर, आर्य समाज भवन देखा। मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसा सुंन्दर आर्य समाज का भवन नहीं देखा। उसे वहां के लोग सुरीनाम का ताजमहल कहते हैं। बहुत ही भव्य इमारत है। 2009 में वे इसके निर्माण की स्वर्णजयन्ती मनाएंगे और उस वर्ष का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन वहां होगा।

उसके बाद सूरीनाम में भारतीय राजदूत श्री अशोक शर्मा से मिले। उनसे तो करीब डेढ़ घंटा चर्चा चलती रही। देश की धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों पर। एक बात उन्होंने बहुत सुन्दर कही– जिसकी चर्चा मैं यहां करना चाहूंगी, उन्होंने कहा कि हम कट्टर सनातनी थे, परन्तु मेरे एक मित्र ने मुझे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को दिया। उसे पढ़ने के बाद मैंने अपने घर से सभी मूर्तियों को उठाकर बाहर फेंक दिया। यह था मेरे ऋषि दयानन्द का कमाल। मुझे दूसरे दिन ही गुयाना वापिस आना था। बोले–काश आप पहले मुझसे मिलने आती तो मैं आपके कार्यक्रम एम्बेसी में भी करवाता। मैंने कहा फिर कभी यहां आई तो आपकी एम्बेसी में प्रवचन करूंगी।

सूरीनाम का आर्य दिवाकर, आर्य समाज भवन देखा। मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसा सुंन्दर आर्य समाज का भवन नहीं देखा। उसे वहां के लोग सुरीनाम का ताजमहल कहते हैं। बहुत ही भव्य इमारत है। 2009 में वे इसके निर्माण की स्वर्णजयन्ती मनाएंगे और उस वर्ष का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन वहां होगा, ऐसा वहां के प्रमुख पं. बन्सराज जी ने मुझसे कहा तथा निमंत्रण भी दिया। सभी कह रहे थे कि आप गुयाना तो इतने समय रहीं और सूरीनाम को सिर्फ एक सप्ताह दिया। अगली बार आप कम से कम एक महीना अवश्य रुकेंगी। सूरीनाम में हम बहन श्रीमती तारा सुक्कु के यहां ठहरे थे। बहुत ही सम्भ्रांत परिवार था। सूरीनाम में आर्य दिवाकर संस्था बहुत काम कर रही है, उनके बहुत से स्कूल चल रहे हैं। एक बहुत बड़ा अनाथालय है। अन्य सेवा के कार्यक्रम चलते रहते हैं। वहीं दिन में तीन दिन तक बच्चों को योग सिखाया। विभिन्न स्कूलों में विद्यार्थियों के सम्मुख प्रवचन दिये।

29 अक्तूबर को गुयाना वापिस आ गई। दो ढाई महीने बाद गुयाना के जार्जटाऊन शहर आश्रम में वापिस आ गई। फिर आई 9 नवम्बर को दीपावली। डॉ. सुग्रीभ–पार्वती बहन, जीनादास तथा हम; सब ने मिलकर दीपावली मनाई। रात में डॉ. साहब के साथ कार में पूरे शहर में घूमकर रोशनी देखते रहे। कई मकान तो बहुत ही सुन्दर रोशनी से जगमगा रहे थे। पूरा भारत जैसे वहां जीवन्त हो गया था।

11 नवम्बर का यादगार दिन– उस दिन भाई दूज का पावन पर्व भी था साथ ही साथ मेरा जन्मदिन भी। सेन्ट्रल आर्यसमाज गुयाना ने मेरे जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम रखा, जिसे लोग बहुत खतरनाक देश कह कर मुझे डरा रहे थे। वहां इतना प्यार, इतनी इज्जत मिलेगी सोचा भी नहीं था। भाईदूज पर सुबह–सुबह ही उठकर डॉ0 सुग्रीव को तिलककर मोली बाँधकर भाई बनाया। फिर हम आर्य समाज रवाना हुए, क्योंकि 9 बजे से यहां विशेष कार्यक्रम था। जैसे ही हम आर्य समाज पहुंचे बाहर बरामदे में सुन्दर रंगोली सजा कर रखी थी तथा लिख रखा था – हैप्पी बर्थ डे साध्वी जी गुयाना के विभिन्न आर्य समाजों से लोगों को आमंत्रित किया था। मेरे जन्मदिन का यज्ञ भाई डॉ. सुग्रीव ने सम्पन्न कराया। फिर हर आर्य समाज के प्रतिनिधियों ने जन्मदिन के गीत गाये। और अपने विचार रखें। सबका सार यही था कि हम तो चाहते हैं, साध्वीजी यहीं रह जाए, वापिस न जाएं। कई भाई बहिन तो बोलते–बोलते भावुक होकर रो भी पड़े। वह मेरे जीवन का यादगार जन्मदिन हो गया और उसदिन भूल से मैं अपना सेलफोन कमरे में ही भूल आई। जब वापिस आकर देखा तो उसमें 20मिसकॉल थीं।

– क्रमशः

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की तैयारियों के लिए

दिल्ली स्थित आर्यसमाजों की क्षेत्रीय बैठकों का आयोजन

महर्षि दयानन्द का 125वां निर्वाण वर्ष समापन की ओर अग्रसर है। गत वर्ष विज्ञान भवन में उद्घाटन के पश्चात् सारे भारत में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए और किए जा रहे हैं। दिल्ली में इस कार्यक्रम को बहुत ही जोर–शोर से मनाया गया। दिल्ली की प्रत्येक आर्यसमाज, आर्य विद्यालय, अन्य आर्यसंस्थाओं ने इस अवसर पर कोई न कोई कार्यक्रम आयोजित किया है, यह प्रसन्नता का विषय है। किन्तु अभी एक वर्षीय कार्ययोजना का कुछ योजना का भाग शेष है जिसे पूर्ण करने के लिए हम सभी को जुटना होगा। अतएव 125वें निर्वाण वर्ष, दिल्ली की आर्यसमाजों का इतिहास लेखन, सार्वदेशिक शताब्दी समारोह, मथुरा में आयोजित स्वर्ण शताब्दी दीक्षा आर्य महासम्मेलन, दिल्ली के आर्यजनों का विशिष्ट कार्यों हेतु सम्मान योजना तथा कुछ संगठनात्मक आवश्यक विषयों पर महत्वपूर्ण विचार–विमर्श हेतु दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य कार्यकर्ताओं की क्षेत्रीय बैठकों का आयोजन सभा की ओर से किया गया है। समस्त आर्यसमाजों, आर्य बन्धुओं, कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों से निवेदन है कि बैठक की तिथि एवं स्थान अभी से नोट कर लें तथा जिस बैठक में जिस–जिस आर्यसमाज का नाम हो उस बैठक में आर्यसमाज के अधिकारी निश्चित ही पधारने का कार्यक्रम बना लेवें।

तिथि	समय	बैठक का स्थान	आमन्त्रित आर्यसमाजें
रविवार 2 अगस्त, 09	सायं 4 बजे	आर्यसमाज जनकपुरी सी–3 (पश्चिमी दिल्ली–1)	जनकपुरी ए – बी– सी–डी ब्लाक, सीतापुरी, द्वारका, आशा पार्क, नांगल राया, एल ब्लाक आनन्द विहार, रामगली हरिनगर घंटाघर, अशोक नगर, तिलक नगर, महावीर नगर, इन्द्रा पार्क, सागरपुर, पालम गांव, पालम कालोनी, शाहबाद मुहम्मदपुर, डी ब्लाक विकासपुरी, बाहरी रिंग रोड तथा अन्य क्षेत्रीय आर्यसमाजें।
रविवार 9 अगस्त, 09	सायं 4 बजे	आर्यसमाज कीर्ति नगर (पश्चिमी दिल्ली–2)	मोती नगर, सुदर्शन पार्क, न्यू मोती नगर, टैगोर गार्डन, रमेश नगर, पश्चिम पुरी, पंजाबीबाग पूर्वी–पश्चिमी–विस्तार, पश्चिम विहार, पटेल नगर, नारायणा, इन्द्रपुरी, शादीपुर, मानसरोवर गार्डन, श्रद्धापुरी, कर्मपुरा, राजौरी गार्डन तथा अन्य क्षेत्रीय समाजें।
शनिवार 15 अगस्त, 09	प्रातः 11 बजे	आर्यसमाज सैनिक विहार	उत्तरी पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल की समस्त आर्यसमाजें।
शनिवार 15 अगस्त, 09	सायं 4 बजे	आर्यसमाज प्रीत विहार	पूर्वी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजें।
सोमवार 17 अगस्त, 09	सायं 5 बजे	आर्यसमाज हनुमान रोड	मध्य दिल्ली क्षेत्र की आर्यसमाजों – नया बांस, सीताराम बाजार, करोल बाग, देव नगर, माडल बस्ती, किशन गंज मिल एरिया, राजेन्द्र नगर, नबी करीम, आर्य नगर पहाड़गंज, चूना मंडी पहाडगंज, दरियागंज, विक्रम नगर, मिण्टो रोड।

पृष्ठ 8 का शेष

हॉलैण्ड वालों की मातृभाषा 'नीदरलैण्ड्स याने डच' सूरीनाम की राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा बनी। इसी भाषा के माध्यम से आज तक सूरीनाम में शिक्षा दी जाती है।

नीग्रो एवं बुशनीग्रो :– जब यूरोपीय उपनिवेशी सूरीनाम के आदिवासियों को दास बना कर काम करवाने में असफल रहे तब वे पूर्वी और पश्चिमी अफ्रीका के समुदायों को सूरीनाम लाये। यह धंधा 16 वीं शताब्दी के आरम्भ से लेकर 18 वीं शताब्दी के आरम्भ तक चलता रहा। इस तरह करीब 30,000 नीग्रों इस उपनिवेश के नागरिक बने। परन्तु उपनिवेशवादी अत्याचारों से तंग आकर वे अवसर पाकर समय–समय पर जंगलों की ओर भागने लगे और वहीं रहने लगे। ये लोग पहाड़ों और झरनों के आस पास में अपना निवास स्थान चुना, क्योंकि उस समय उपनिवेशियों का वहाँ पहुंचना असम्भव था। आदिवासियों की तरह ये लोग भी सुसंगठित होकर समय–कुसमय कृषिकेन्द्रों (प्लस्टेशनों) पर आक्रमण करते और साथियों, स्त्रियों, बच्चों आदि को लेकर अपने नये निवास स्थान पर आ जाते थे। वे अपने साथ अपना सारा सामान और कुछ हथियार भी लाते थे। इन भागे हुए नीग्रो को मारान्स कहते हैं। उनको बुश नीग्रो के नाम से भी पुकारा जाता है। वे अपने को स्वतन्त्र सूरीनाम मानते हैं। उनके कई क्रान्तिकारी नेता हुए। वे बहुत हिम्मत के साथ उपनिवेशियों से लड़े और उनको दक्षिण याने घने जंगलों की ओर बढ़ने से रोका। जिस तरह से आदिवासियों ने किया था। आज तक उनकी संतान जंगलों में रहना पसन्द करती हैं। उनकी एक बहुत बड़ी संख्या के लोग राजधानी पारामारीबो और अन्य स्थानों मे बसे हुए हैं। वे नौकरी भी करने लगे हैं। अपने बच्चों को स्कूलों में पढ़ने के लिए भेजते हैं। उनके नेतागण राजनीति में वर्षों से भाग ले रहे हैं। अब तो उनकी राजनैतिक पार्टी वर्तमान संयुक्त सत्ताधिकारी का अंग हो गई है। वे आगे बढ़ने के लिए बहुत कोशिश करते हैं। संयुक्त राष्ट्र सघ अमेरिका के राष्ट्रपति बाराक ओबामा के चुनाव और शपथ लेने के बाद ये लोग भी भविष्य में सूरीनाम के राष्ट्रपति बनने की घोषणा गत वर्ष सूरीनाम के दैनिक अखबारों में कर दी है।

बुशनीग्रो वालों के दक्षिण जंगलों में बस जाने के कारण आदिवासी लोगों को दक्षिण की ओर और घने जंगलों में बसना पड़ा। जो नीग्रो राजधानी पारामारीबो अथवा अन्य नगरों या उनके आसपास में रहते वे स्रानांग भाषा बोलते हैं। स्रानाँग को प्रायः सभी लोग समझते हैं। डच भाषा के साथ–साथ स्रानाँग और सरनामी हिन्दी ने भी सम्पर्क भाषा का स्थान ले लिया है।

बाइबिल संस्थाएँ अन्य भाषाओं की तरह स्रानाँग के माध्यम से भी अपना ईसाई मत का प्रचार करती हैं। गिर्जाघरों के अतिरिक्त आकाशवाणी, दूरदर्शन और अन्य माध्यमों द्वारा इसका प्रचार होता है।

सूरीनाम का राष्ट्रगीत डच भाषा में है। स्रानाँग में उसके अनुवाद को सरकार द्वारा मान्यता मिली है और डच के साथ–साथ गाया जाता है।

इस राष्ट्रगीत को हमारे एक स्वर्गीय पंडित माताप्रसाद पुनवासी जी ने सरनामी हिन्दी में अनुवाद किया है जिस हम भारतवंशी अपने सूरीनाम के विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आरम्भ में गाते हैं। जो इस प्रकार है:–

उठो देश निवासी उठो
सरनाम धरती बुलाती है
पुरखें चाहे जहाँ से आये
हमें देश सम्हालना है
हम किसी से ना ही डरेंगे
ईश्वर अगुआ है हमारा
जिन्दगी भर अन्तिम स्वाँस तक
हम लड़ेंगे हित सूरीनाम।

पंडित सूर्य प्रसाद बीरे जी 24 वर्ष पूर्व हॉलैण्ड प्रवास से पहले सूरीनाम में कार्यरत थे। उन्होंने एक बार सूरीनाम के भूतपूर्व राष्ट्रपति महामहिम चेन आ सेन की 48वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सूरीनाम के राष्ट्रभवन में संस्कृति मन्त्री आदि महानुभावों की उपस्थिति में इस राष्ट्रगीत को सरनामी में गाया था। इस के बाद राष्ट्रपति जी और अन्य लोगों ने सम्मान करते हुए अपनी बधाइयाँ दीं। एक बार सूरीनाम के वर्तमान राष्ट्रपति कुछ वर्षों पहले हॉलैण्ड आये हुए थे। उन्होंने एक बैठक बुलवायी थी। उस बैठक में पण्डित बीरे जी भी उपस्थित थे। उन्होंने देखा कि सूरीनाम के राष्ट्रपति को डच, स्रानाँग, आदिवासी भाषा, जावानीश और चाइनीज भाषाओं में मंच से बारी–बारी गाया जा रहा था। तब उन्होंने अनुभव किया कि वहां कोई भी नहीं है जो इस राष्ट्रगीत को सरनामी में गाये। तुरन्त उन्होंने निश्चय किया और माइक्रोफोन पकड़ कर सुरनामी में राष्ट्रगीत गाना आरम्भ किया तो राष्ट्रपति जी ने राष्ट्र गीत को आदर देने के लिए तुरन्त अपनी जगह से उठ कर सीधे खड़े हो गये और सभी लोगों से वैसा करने को कहा।

सभा के बाद बीरे जी ने तुरन्त अपने लोगों को अपनी प्रतिक्रिया दी कि इससे सरनामी भाषा को अन्य सूरीनाम की भाषाओं की तरह मान्यता मिल गयी है।

चाइनीज लोग, जो इस समय अधिक से अधिक संख्या में सूरीनाम आ रहे हैं वे और गयाना से आये हुए लोग अपने व्यापारी जीवन अथवा कार्यक्षेत्र में स्रानांग भाषा का प्रयोग करते हैं।

चाइनीज व चीनी समुदाय :– सन् 1853 से चाइनीज को शर्तबन्दी प्रथा के अन्तर्गत सूरीनाम लाया गया। वे कृषि में सफल नहीं रहे। आजकल उनको देश के कोने–कोने में देखा जाता है। ये अपनी भाषा दूसरों को नहीं सिखाते। चाइनीज सरकारी कामकाज के हर एक क्षेत्र में मिलते हैं।

जावी/इंडोनेशियन :– सन् 1890 से लेकर 1939 तक जावा, बाली आदि द्वीपों से इंडोनेशियन सूरीनाम में लाये गये। वे कृषि एवं गन्ने की खेती में सफल हुए। उनको भारतीय किसानों के गावों अथवा उनके नजदीक ही बसाया गया था। वे भारतीय फिल्मों को बहुत पसंद करते हैं। और हिन्दी फिल्मी गाने भी गाते हैं। उनकी भाषा का स्रोत संस्कृत है। इंडोनेशिया किसी समय में भारत का सांस्कृतिक उपनिवेश था। बाली के लोग अपने को हिन्दू मानते हैं। सूरीनाम के लगभग 1000 इंडोनेशियन लोग हिन्दू हैं। रामायण एवं महाभारत की मान है। वे इनके आधार पर नाटक भी खेलते हैं। राजा शब्द को राजों कहते हैं। सो यहाँ ध्वनि स्तर पर अन्तर मिलता है। भारतवंशी लोग सूरीनाम में इंडोनेशियन को मलायभाई कहते हैं। जो इंडोनेशियन मुसलमान हैं वे अरबी भाषा और अरबी लिपि का अधिक प्रयोग औपचारिक अवसरों पर करते हैं।

–क्रमशः

आर्य समाज कर्मपुरा नई दिल्ली –15 का
39 वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कर्मपुरा का 39वां वार्षिकोत्सव बहुत धूमधाम से 18 जून 2009 से 21 जून 2009 तक बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः 7.00बजे से 9.00 बजे तब शतकीय यज्ञ की आहुतियां दी गयीं। प्रतिदिन 4 यजमान सपत्नीक उपस्थित रहे। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य इन्द्रदेव जी, अधिष्ठाता वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली रहे। श्री लाल सिंह शास्त्री जी ने ब्रह्माजी का भरपूर सहयोग किया। प्रतिदिन शाम के 7 से 9.30 बजे तक भजन तथा प्रवचन का कार्यक्रम रहा। जहाँ एक ओर पं. राजवीर शास्त्री जी के मधुर भजनों ने सबका मन मोह लिया। भजनों के पश्चात् आचार्य इन्द्रदेव जी के प्रवचनों ने सभी वेदप्रेमियों तथा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

16 यजमानों ने वैदिक मन्त्रों तथा पूर्णाहुति के साथ शतकीय यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्रीय विधायक श्री सुभाष सचदेवा जी ने आर्यसमाज की गतिविधियाँ बढ़ाने पर समाज के लोगों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने समाज के सभी बन्धुओं को समाज के कार्य को और अधिक 'बिना थके' कार्य करने की प्रेरणा दी वहीं पर आर्य केन्द्रिय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी से आग्रह किया कि वे दूरदर्शन तथा अन्य माध्यमों से धर्म के नाम पर लोगों को बेवकूफ बना कर अन्धविश्वास तथा कुरीतियां फैलाने जाने से सतर्क रहें तथा जागरुक आर्य समाज के कार्यकर्त्ता बनें।

इस अवसर पर कर्मपुरा आर्य समाज मन्दिर के पुरोहित के पद पर लगभग 17 वर्षों से आसीन योगाचार्य श्री लालसिंह जी को भी भाव भीनी विदाई दी गयी। योगाचार्य श्री लाल सिंह जी को अश्रुपूर्ण विदाई देते हुए आर्यसमाज कर्मपुरा के प्रधान श्री आदर्श कुमार जी ने उनकी समाज के प्रति की गयी सेवाओं की भूरी–भूरी प्रशंसा की तथा कहा की वे जहां भी रहेंगे अपनी सुगंधी हर ओर फलायेंगे।

इस शुभ अवसर पर वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा जी ने आर्य समाज कर्मपुरा के उत्थान के लिये हर सम्भव सहायता देने के आश्वासन के साथ समाज की उन्नति का भी आशीर्वाद दिया।

– आदर्श कुमार, प्रधान
यशपतराय गुप्ता, मन्त्री

आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली का
श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार समारोह

27 जुलाई से 2 अगस्त 2009

यज्ञ : प्रातः 7 से 8 बजे
ब्रह्मा : आचार्य नरेन्द्रपाल
भजन : श्री कुलदीप आर्य
उपदेशः आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी
भजन–प्रवचन : सायं 7 से 10बजे
समापन कार्यक्रम : 2 अगस्त 09
विचार गोष्ठी : प्रातः 10 से 1 बजे
विषय : वेद आधारित सृष्टि उत्पत्ति।
अध्यक्षः धर्मपाल आर्य

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

– विद्यावती आर्या, प्रधान
राकेश कुमार आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज प्रशान्त विहार, दिल्ली में
ध्यान योग शिविर

आर्य समाज प्रशान्त विहार के तत्त्वावधान में तीन दिवसीय "ध्यान योग शिविर आध्यात्मिक शंका समाधान एवं सत्यार्थ प्रकाश प्रवचन माला" 18–20 अगस्त 2009 को स्वामी विवेकानन्द 'परिव्राजक' के पावन सान्निध्य में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ प्रातः 6.30 से 7बजे, 7 से 8 ध्यान योग और रात्रि 8 से 9.30 बजे तक भजन, सत्यार्थ प्रकाश प्रवचन माला तथा शंका समाधान होगा।

– दुर्गा प्रसाद कालड़ा, प्रधान
ओम प्रकाश भावल, मन्त्री

आर्यसमाज बी. एन. पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली में
वेदोत्सव का आयोजन

6 अगस्त से 9 अगस्त 2009 तक

यज्ञ : प्रातः 6.30 से 8.30
ब्रह्मा–प्रवचनः श्री प्रेम नारायण विद्यार्थी
यज्ञ सहयोगी : श्री रमेशचन्द्र शास्त्री
भजन : श्री सुदर्शन मनचन्दा
पूर्णाहुति :रविवार, 9 अगस्त 2009
यज्ञ–भजनः प्रातः 7.30 से 11 बजे
वेदोत्सव : प्रातः 11 बजे
मुख्य अतिथि : श्री हरवंश लाल उप्पल
मुख्य वक्ताः श्री प्रेम नारायण विद्यार्थी

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– ब्रजभूषण तायल, प्रधान
सुरेश गोयल, मन्त्री

आर्यसमाज मंदिर शकरपुर दिल्ली का
वेदप्रचार सप्ताह

5 अगस्त से14 अगस्त, 2009

चतुर्वेद शतक यज्ञ : 6.45 से 8.15
ब्रह्मा : आचार्य विष्णुमित्र मेधावी शास्त्री
भजन : श्री मधुर शास्त्री
भजन प्रवचन – रात्रि 8 से 10 बजे
पूर्णाहुति एवं जन्माष्टमी समारोह
14 अगस्त, 2009

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– मिश्रीलाल गुप्ता (प्रधान)
पतराम त्यागी (मंत्री)

आर्यसमाज प्रशान्त विहार दिल्ली की "रजत जयंती वर्ष" एवं 125 वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में
वेद प्रचार सप्ताह

3 अगस्त से 9 अगस्त 2009

अथर्ववेद पारायण यज्ञ : प्रातः 7 बजे
ब्रह्मा : डॉ0 विनय विद्यालंकार
उपाचार्य : श्री शिव नारायण शास्त्री
भजन : श्री कंचन कुमार
वेद प्रवचन : डॉ. विनय विद्यालंकार
भजन–प्रवचनः सायं 7.30 से 9.30
आर्य महिला सम्मेलन : 7 अगस्त
समयः दोपहर 2.30 से 5.30 बजे
पूर्णाहुति एवं समापन समारोह
9 अगस्त, 09 प्रातः 7 से 1 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– दुर्गा प्रसाद कालड़ा, प्रधान
ओमप्रकाश भावल, मन्त्री

आर्यसमाज अलमोड़ा (उत्तराखंड) का
वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर अलमोड़ा का वार्षिकोत्सव 11–12 जुलाई, 09 को उत्साह एवं उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रातः यज्ञ–हवन–उपदेश कार्यक्रम एवं दिन में विद्यार्थियों हेतु (जूनियर एवं सीनीयर वर्ग) निबन्ध/ पिक्चर स्टोरी रायटिंग/समूह वार्तायें/ सामान्य ज्ञान लिखित/ मेंहदी/ क्विज प्रतियोगिता हुई।

– गिरीश चन्द्र मल्होत्रा, प्रधान

आर्यसमाज मारतहल्लि, बेंगलोर द्वारा
मानव सेवा वाहन समर्पित

आर्य समाज मारतहल्लि बेंगलोर के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के सहयोग एवं प्रयासों के फलस्वरूप मानव सेवा हेतु समर्पित मानव सेवा वाहन का उद्घाटन वैदिक विद्वान डा. धर्मवीर जी, मंत्री परोपकारिणी सभा, अजमेर एवं डा. राधाकृष्ण वर्मा, प्रधान कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा रविवार, 5 जुलाई 2009 को आयोजित विशेष कार्यक्रम में किया गया।

डा. धर्मवीर जी ने आर्यसमाज मारतहल्लि, बेंगलोर के सभी सदस्यों को उनके इस प्रयास हेतु बधाई दी एवं उत्साहवर्धन किया।

– अरुण कुमार त्रिवेदी (मंत्री)

आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत में
वार्षिक यज्ञोत्सव एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व

आर्यसमाज शान्ति नगर (चार मरला) सोनीपत में संस्था के प्रधान श्री वीर सैन श्रीधर की अध्यक्षता में विश्व कल्याण की भावना से आध्यात्मिक के नायक श्री कृष्ण के जीवन पथ पर चलने हेतु यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन आर्य समाज के प्रांगण में **14 अगस्त 2009 से 16 अगस्त 2009** तक किया जा रहा है। कार्यक्रम में आचार्य भरत लाल जी शास्त्री (हाँसी), आचार्य सन्दीप आर्य (सोनीपत), आचार्य नरेन्द्र जी मैत्रेय (दिल्ली), पं. बृजपाल जी शर्मा कर्मठ (मुज्जफर नगर) आदि पधारेंगे।

– मंत्री

आर्य समाज पिम्परी, महर्षि दयानन्द पथ, पिम्परी पुणे–411017
सहायक चाहिए

इस समाज को अपनी बढ़ती हुई गतिविधियों के लिये एक सहायक की आवश्यकता है, जो सदस्यों के परिवारों से सम्पर्क रख सके एवं अन्य व्यक्तियों को आर्य समाज के सम्बन्ध में बता सकें। पदाभिलाषी स्नातक हों।

गुरुकुलों के स्नातक को प्राथमिकता। उम्र– अधिकतम 35 वर्ष सामान्य वेतन के अतिरिक्त बिजली पानी की सुविधा। एकल आवास सुविधा। कृपया सम्पर्क करें –

– हरिकृष्ण वाप्ता, मंत्री
फोन नं. : 020–27410047

स्वामी जगदीश्वरानन्द स्मृति अंक का प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वामी जगदीश्वरानन्द जी की स्मृति में एक विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। जिन महानुभावों के पास पूज्य स्वामीजी के जीवन से सम्बन्धित कोई फोटो, लेख, सूचनाएं या कोई अन्य सामग्री हो, जो इस विशेषांक के लिए उपयोगी हो सके, कृपया उसे सभा कार्यालय के पते पर भेजने की कृपा करें। विशेषांक के लिए विज्ञापन सहयोग भी सादर आमन्त्रित हैं।

– विनय आर्य, महामन्त्री

शोक समाचार
श्री लखीराम राठी का निधन

सुप्रसिद्ध आर्यनेत्री, समाज सेवी, स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों की समर्थक एवं पूर्व शिक्षामंत्री हरियाणा श्रीमती शान्ति राठी के पति श्री लखीराम राठी का 13 जुलाई 2009 को आकस्मिक निधन हो गया। उनकी स्मृति में 19 जुलाई 2009 को उनके निवास स्थान पर हवन–यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरियाणा के सदस्यों श्री वेदमुनि वानप्रस्थी, श्री मनोहर लाल चावला, हरिचन्द्र स्नेही, श्री नित्यप्रिय आर्य, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री वीर सैन श्रीधर सहित अनेक आर्यजनों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।
– सम्पादक

तथाकथित संत रामपाल को पुनः आश्रम न बनाने देंगे – आर्यसमाज

करौंथा में वीर सोनू शहीद महासम्मेलन सम्पन्न

वीर सोनू बलिदान व्यर्थ नहीं होगा – आचार्य बलदेव

गांव करौंथा में 12 जुलाई 2009, रविवार को हरियाणा सर्वखाप पंचायत व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा शहीद महासम्मेलन में फैसला किया गया कि गांव करौंथा स्थित सतलोक आश्रम में रामपाल को फिर से नहीं बसने दिया जायेगा।

महासम्मेलन में प्रदेश में हो रही गोहत्या की घटनाओं की भी निन्दा की गई। झज्जर रोड स्थित करौंथा में रविवार को तीन साल पहले सतलोक आश्रम के संचालक और ग्रामीणों के बीच हुई झड़प में मारे गये सोनू को श्रद्धांजलि दी गई। महासम्मेलन की शुरूआत 84 गांव के प्रधान हरदीपसिंह अहलावत और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य बलदेव ने शहीद सोनू को श्रद्धांजलि अर्पित करके की। हरदीपसिंह अहलावत और आचार्य बलदेव ने सरकार को चेतावनी दी कि यदि सतलोक आश्रम रामपाल को सौंपा गया तो सर्वखाप पंचायत और आर्यसमाज इसका कड़ा विरोध करेंगे। अहलावत खाप के प्रधान जयसिंह अहलावत ने भी इनका समर्थन किया और रामपाल के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की।

गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल मंत्री ने सरकार से मांग की कि प्रदेश में गोकशी पर अंकुश लगाया जाये और ऐसा करने वालों को मृत्युदण्ड दिया जाये। अठगांव के प्रधान कंवलसिंह हुड्डा खाप के पूर्व प्रधान सूरतसिंह, महम चौबीसी के उपप्रधान सूबेसिंह, किनाना तपा के प्रधान कपूरसिंह,सांगवान खाप के प्रतिनिधि ऋषिपाल, कुण्डू खाप के प्रतिनिधि और महासम्मेलन में भाग लेने वाली सभी पंचायतों, सामाजिक संगठनों और खापों ने भी आचार्य जी की मांग का हाथ उठाकर समर्थन किया। महासम्मेलन में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान धर्मपाल, दिल्ली सभा के महामंत्री विनय, उपमन्त्री प्रो. ओमकुमार, चौधरी मांगेराम, आचार्य हरिदत्त, आचार्य वेदमित्र, आचार्य अभयसिंह, एमडीयू के डा. सुरेन्द्र कुमार, ब्र0 ब्रह्मदेव, डा. श्याम कुमार, मनजीत दहिया, यशवीर आर्य, सत्यवीर, देवकीनन्दन, उमेदसिंह और जयवीर आर्य के अलावा कई सामाजिक संगठन और खापों के प्रधानों ने भी अपने विचार रखे।

महासम्मेलन में पारित प्रस्ताव

1. पाखण्डी रामपाल वीर सोनू का हत्यारा तथा सैकड़ों नवयुवकों को घायल करने का अपराधी है। इसे मृत्यु दण्ड दिया जाये। यह महा सम्मेलन सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करता है।
2. पाखण्डी के शिष्य जनता में विवाद करवाने वाली तथा झगड़ा उत्पन्न करने वाली पुस्तकें बांटते हैं। उन्हें सरकार द्वारा तुरन्त रोका जाये।
3. करौंथा ग्राम के आपपास की जनता रामपाल के दूषित कारनामों को जानती है। आसपास उसके शिष्य नहीं हैं। यदि कोई भूला भटका हो तो उसको यह सम्मेलन बहिष्कृत करता है, जिससे पाखण्ड की जड़ कटे।
4. कोर्ट को प्रभावित करने हेतु वह अपने साथ तारीख वाले दिन पर्याप्त व्यक्ति लाता है। शान्ति भंग न हो, उसे रोका जाये।
5. किलोई के पास दस गायों के शिर कटे हुए मिले हैं। डबवाली (सिरसा) में भी 50 गायों के सिर कटे मिले हैं। अन्य जिलों में भी इसी प्रकार की सूचनायें मिल रही हैं। महा सम्मेलन में उपस्थित हजारों पुरुष व महिलायें इसका पुरजोर विरोध करते हैं।

आर्यसमाज जनकपुरी सी ब्लाक, पंखा रोड, नई दिल्ली का

वेद प्रचार सप्ताह

5 अगस्त से 14 अगस्त 2009

प्रभातफेरी : 1 से 4 अगस्त, 2009
यज्ञ : प्रातः 7 बजे
ब्रह्मा : आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती
भजन : श्री अमर सिंह आर्य

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह
14 अगस्त, 09

इस अवसर पर वैदिक साहित्य वेद, सत्यार्थ प्रकाश सहित प्रचारार्थ आधे मूल्य पर विक्रय किया जाएगा।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– शिवकुमार मदान, प्रधान
रमेशचन्द्र आर्य, मन्त्री

वेद प्रचार मण्डल, पश्चिमी दिल्ली द्वारा

पार्कों एवं पारिवारिक सत्संगों का आयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्या में वेद प्रचार मण्डल दिल्ली ने पार्कों में (45 मिनट का प्रवचन) एवं पारिवारिक सत्सगों (दो घण्टे) द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार प्रारंभ कर दिया है। इसके अन्तर्गत आचार्य इन्द्रदेव जी अधिष्ठाता के प्रचार मंडल द्वारा यज्ञ एवं प्रवचन कार्य किया जायेगा। मंडल की पश्चिमी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनुरोध है कि कार्यक्रम के लिए यथाशीघ्र सम्पर्क कर आर्य सिद्धान्त के प्रचार प्रसार में अपना योगदान दें। सम्पर्क सूत्रः–

सुरेन्द्र बुद्धिराजा	**वीरेन्द्र सरदाना**	**आचार्य इन्द्रदेव**
प्रधान	मन्त्री	अधिष्ठाता, वेद प्रचार
9810254630	9911140756	9211367978

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारीगण

कृपया ध्यान दें!

अनेक विद्वान, 'निष्ठावान कार्यकर्त्ता' एवं अधिकारियों से विचार–विमर्श के पश्चात् यह निष्कर्ष सामने आया कि हमारे आर्य समाजों के रविवारीय सत्संगों में प्रस्तुत होने वाले प्रवचन एक क्रमबद्ध व सिलसिलेवार तरीके से नहीं हो रहे हैं। इस कारण, इन प्रवचनों से सत्संग प्रेमी श्रद्धालु श्रोताओं को जो लाभ प्राप्त होना चाहिए था, वह लाभ श्रोताओं को मिल नहीं रहा है। **विषय के बिखराव की वजह से प्रवचन की हृदयंगम आकृति श्रोताओं के मन–मस्तिष्क में नहीं बन पा रही है और उसका प्रभाव भी नहीं पड़ रहा है। इस कटु सत्य से आप भी परिचित हैं।**

अब इसका समाधान क्या है? इसका सबसे अच्छा समाधान यह है कि प्रत्येक समाज में पूर्वतः विषय निर्धारित करके पहले से ही सभी घरों में उस विषय का प्रचार करें। परीक्षणों से पता चला है कि इस प्रक्रिया से सत्संग उपस्थिति निश्चित बढ़ती है। तत्पश्चात् उस सत्संग में आने वाले विद्वान् उपदेशक जी से उसी निर्धारित विषय पर प्रकाश डालने की प्रार्थना करें। इससे उत्तम तैयारी होती है और प्रवचन का स्तर ऊँचा होता है। और विषय का बिखराव न होने से प्रवचन सभी श्रोताओं के हृदय में बैठ जायेगा और इससे विशेष लाभ होगा।

इस प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए सभा ने निर्णय लिया कि जो आर्य समाज इस प्रकार विषय निर्धारित करके अपने रविवारीय सत्संग में प्रवचन कराएंगे सभा उस समाज के सत्संग का विवरण – यथाः प्रवचन का विषय, उपदेशक का नाम, प्रवचन का समय आदि आर्य सन्देश में प्रकाशित करेगी। और अपनी वैवसाईट पर भी देगी। अतः सभी अधिकारियों से निवेदन है कि इस प्रक्रिया का लाभ उठायें। **इस प्रक्रिया पर आर्यसमाजों से सुझाव आमन्त्रित हैं।**

– विनय आर्य, महामन्त्री

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी कक्षा से 12वीं कक्षा तक। पूरे सैट का मूल्य 300/-

आकर्षक छूट 20%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों को नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

सभा के वेद प्रचार विभाग के अन्तर्गत उपदेशक बैठक सम्पन्न

सभा के उपदेशकों के लिए बनेंगी बहुआयामी योजनाएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग के अन्तर्गत वेद प्रचार में रत उपदेशक महानुभावों की एक विशेष बैठक वर्तमान स्थितियों में उपयोगी कार्यों की चर्चा हेतु आर्यसमाज करोलबाग नई दिल्ली में दिनांक 26 जुलाई, 09 को सम्पन्न हुई। सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता आचार्य खुशीराम शर्मा जी एवं आचार्य हरि प्रसाद आर्य जी के विशेष प्रयत्न से बैठक में उपयोगी चर्चा हुई। हम यहां बता दें कि जो उपदेशक महानुभाव सभा की ओर से दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों में साप्ताहिक सत्संग तथा अन्य अवसरों पर प्रवचन हेतु जाते हैं उन्हीं उपदेशक महानुभावों को इस बैठक में आमन्त्रित किया गया था। बैठक में कुछ समस्याओं, कुछ आवश्यकताओं तथा वेद प्रचार हेतु उठाए जाने वाले आवश्यक कदमों पर चर्चा हुई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने समस्त उपदेशक महानुभावों का स्वागत करते हुए उनका धन्यवाद किया जो वर्षों से वेद प्रचार के कार्यों में जुटे हैं। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि जो समस्याएं मान्य उपदेशक महानुभावों के समक्ष आ रही हैं, उनके समाधान का हर सम्भव प्रयत्न सभा की ओर से किया जाएगा तथा साथ ही उपदेशक महानुभावों के लिए उपयोगी योजनाएं भी सभा की ओर से चलाई जाएंगी। उन्होंने जिन योजनाओं की चर्चा की। उन पर सभी उपस्थित महानुभावों ने प्रसन्नता व्यक्त की। अन्त में इन योजनाओं पर कार्य करने की सहमति हुई –

1. वेद प्रचार विभाग से जुड़े सभी उपदेशक महानुभावों को आई कार्ड (परिचय पत्र) प्रदान किए जाएंगे।
2. सभी उपदेशक महानुभावों को वर्ष में एक बार निःशुल्क स्वास्थ्य चैकअप की सुविधा सभा की ओर से दी जाएगी।
3. सभी उपदेशक महानुभावों को सशर्त आकस्मिक दुर्घटना बीमा सभा की ओर से करवाया जाएगा।
4. सभी महानुभावों को निःशुल्क आर्यसन्देश 'प्रति सप्ताह' भेजा जाएगा।
5. वेद प्रचार विभाग के उपदेशकों के नाम दिल्ली सभा की वैबसाईट www.delhisabha.com पर प्रसारित किए जाएंगे तथा आर्यसन्देश में भी प्रकाशित किए जाएंगे।
6. महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में सभी उपदेशक महानुभावों का सम्मान करते हुए प्रचार में उपयोगी निःशुल्क साहित्य प्रदान किया जाएगा।

जिन सुझावों पर अभी सभा की अनुमति बाकी है उनमें से कुछ सुझाव ये हैं कि उन बुजुर्ग उपदेशक एवं भजनोपदेशकों के 80 वर्ष की आयु होने के पश्चात् आवास, भोजन एवं चिकित्सा की निःशुल्क व्यवस्था सभा की ओर से की जाए। जिनका सारा जीवन वेद प्रचारार्थ बीता है तथा वर्तमान में उनके परिवार की ओर से उनके रहने तथा आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था नहीं हो पा रही है।

सभा मन्त्री श्री विनय आर्य ने आश्वासन दिया कि इस विषय को सभा की आगामी अन्तरंग सभा बैठक में विचारार्थ रखा जाएगा तथा हर सम्भव प्रयास किया जाएगा कि यह व्यवस्था दिल्ली में बना दी जाए।

बैठक में इस विषय पर गम्भीरता से विचार विमर्श हुआ कि साप्ताहिक सत्संगों में विषयों को क्रमबद्धता से नहीं रखा जा पा रहा, जिसके कारण साप्ताहिक सत्संगों में आने वाले जिज्ञासु महानुभावों की जिज्ञासाएं पूरी नहीं हो पा रही हैं। उपस्थित सभी ने इस पर विचार दिया कि यह आवश्यक है कि जो भी प्रवचन हों वह विषय के आधीन हों, जिन्हें पूर्व में ही सूचित कर दिया जाए। तथा यदि वह विषय चार या पांच सप्ताहों का है तो उस पर निरन्तर एक ही वक्ता प्रवचन दे तथा प्रश्नोत्तर का समय भी श्रोताओं को अवश्य दिया जावे। साथ ही उचित होगा कि उस विषय से सम्बन्धित साहित्य भी उस समय वहां उपलब्ध हो। सभा महामन्त्री जी ने यह भी कहा कि अनेक महानुभाव दिल्ली के बाहर से आते हैं। वे चाहते हैं कि उन्हें मालूम हो कि कौन वक्ता किस विषय पर बोलेंगे जिससे वे भी उन सत्संगों में सम्मिलित हो सकें। इस पर सुझाव आया कि आर्यसमाजों में होने वाले साप्ताहिक सत्संगों में प्रवचनों के विषय आर्यसन्देश में प्रकाशित किए जाएं जिससे पता चले कि किस आर्यसमाज में किस विषय पर प्रवचन किए जाएंगे साथ ही इन विषयों के कार्यक्रम की तिथि स्थान एवं वक्ता सहित सभा की वैबसाइट पर भी प्रसारित किया जाए।

इन किए गए विचारों पर सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा कहा कि यदि इस प्रकार की व्यवस्थाएं की जाएंगी तो निश्चित रूप से वेद प्रचार की गति भी बढ़ेगी तथा साप्ताहिक सत्संगों में आने वाले महानुभावों की रुचि इस ओर जागृत होगी। सभा को इस बैठक को आयोजित करने तथा इन महत्वपूर्ण कार्यों को करने के लिए विशेष साधुवाद दिया। आर्यसमाज करोल बाग की ओर से समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए सुन्दर भोजन की व्यवस्था की गई थी। अन्त में बैठक की व्यवस्थाओं के लिए समाज प्रधान श्री कीर्ति शर्मा जी को धन्यवाद किया गया।

– आचार्य खुशीराम, अधिष्ठाता, वेद प्रचार विभाग, दिल्ली सभा

आर्य संस्थाएं एवं आर्यसमाजें वेद प्रचार विभाग का सहयोग लें

आपको विदित हो कि सभा के अन्तर्गत वेद प्रचार विभाग में 20 उच्च कोटि के विद्वान् अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वे बृहद् यज्ञ, शतक यज्ञ, एवं वार्षिक उत्सवों में दिल्ली तथा आस–पास के क्षेत्रों में वेद प्रचार में संलग्न हैं। आगामी वेद प्रचार सप्ताह हेतु अथवा विशेष कार्यक्रम में आप उनकी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। आचार्य खुशीराम जी वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप में कार्य कर रहे हैं। सभा कार्यालय एवं आचार्य जी से सम्पर्क कर लाभ उठाएं।

– आचार्य खुशीराम, फोनः 25708873

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
www.delhisabha.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती
जीवन चरित्र, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें
www.swamidayanand.com

समलैंगिकता : धारा 377 पर स्वामी अग्निवेश के विचारों से सारे आर्यजगत् में तीव्र प्रतिक्रिया

अनेक स्थानों पर विरोध प्रस्ताव पारित

धारा 377 के मुद्दे पर अब सारा समाज स्वामी अग्निवेश के विचारों को जान चुका है। इसकी तत्कालीन जबरदस्त प्रतिक्रिया आर्यसमाज में हुई है तथा भारत की अनेक आर्यसमाजों में इसके खिलाफ निन्दा एवं विरोध प्रस्ताव पारित किए जा रहे हैं। अनेक लेख इस सम्बन्ध में आर्यसन्देश में प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए हैं, जिनको एक साथ छापना बिल्कुल भी सम्भव नहीं। किन्तु इन सभी लेखों से एक बात निश्चित हो रही है कि आर्यसमाज के लोग सिद्धान्तों को लेकर आज भी पूरी तरह न केवल सजग हैं अपितु गलत दिशा में जाने वाले व्यक्ति चाहें वे कितने भी उच्च पदों पर हों, का विरोध भी करते हैं। उनमें से कुछ पत्रांशों को प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जाएगा।

हम यहां याद दिलाते चलें कि धारा 377 के मुद्दे पर स्वामी अग्निवेश ने सर्वप्रथम लगभग 3 वर्ष पहले एक सम्मिलित पत्र द्वारा दिल्ली हाई कोर्ट से मांग की थी कि वे शीघ्र समलैंगिकों के समर्थन में आदेश पारित करने की कृपा करें। कुछ समय पूर्व दिल्ली हाई कोर्ट के निर्णय के आने पर स्वामी अग्निवेश ने टीवी चैनलों के माध्यम से जिस प्रकार से उसका समर्थन एवं स्वागत किया, उससे सारा आर्यजगत् सकते में आ गया। सारे आर्यजगत् का विरोध स्वयं स्वामी जी की जानकारी में आने के पश्चात् भी वे अपने आपको भारत के तथाकथित बुद्धिजीवियों के साथ खड़े रहने की लालसा में एक कदम और आगे बढ़ गए और उन्होंने केन्द्र सरकार से एक पत्र द्वारा मांग की कि वह दिल्ली हाई कोर्ट के निर्णय का स्वागत करे तथा सुप्रीम कोर्ट में उसके खिलाफ अपील न करे। *हद है यह तो।*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली
प्रधान : श्री गजेन्द्र सिंह सक्सेना
मन्त्री : श्री कृष्णलाल किनरा
कोषाध्यक्ष : श्री यशपाल जी

आर्यसमाज परशुरामपुरी जलालाबाद, शाहजहांपुर (उ.प्र.)
प्रधान : श्री केवल राम आर्य
मन्त्री : श्री रामेश्वर सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रामदास आर्य

स्त्री आर्यसमाज परशुरामपुरी जलालाबाद, शाहजहांपुर (उ.प्र.)
प्रधान : श्रीमती प्रेमवती आर्या
मन्त्री : श्रीमती आशा देवी आर्या
कोषाध्यक्ष : श्रीमती गड़डी देवी आर्या

आर्य वीर दल परशुरामपुरी जलालाबाद, शाहजहांपुर (उ.प्र.)
प्रधान : श्री श्रीकृष्ण आर्य
मन्त्री : श्री हिमांशु आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रजत कुमार आर्य

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद
प्रधान : डॉ. विमल महता
मन्त्री : श्री बलबीर मलिक
कोषाध्यक्ष : श्री कुलभूषण सखूजा

प्रथम पृष्ठ का शेष

हजारों की संख्या में आर्यवीरों का निरन्तर आर्यसमाज और आर्यवीर दल से जुड़ा होना यह बताता है कि सारी गति एक निश्चित योजना के अन्तर्गत चल रही है, जिसे दल के निष्ठावान् अधिकारी अपनी हर प्रकार की क्षमताओं का प्रयोग करके त्याग भावना से आगे बढ़ा रहे हैं। गत दिनों इन कार्यों को और गति देने के लिए यह योजना बनाई गई कि दिल्ली में आर्यवीर दल के पूर्णकालिक शिक्षकों को रखकर शाखा प्रचार का कार्य बढ़ाया जाए। साथ ही साथ उन सभी पूर्णकालिक शिक्षक महानुभावों को एक–एक मोटर साइकिल दी जाए ताकि वे अपनी कार्यक्षमता का पूर्ण इस्तेमाल कर सकें। इस हेतु अभी प्रथम चरण में 5 पूर्णकालिक प्रचारकों (शिक्षकों) की सेवाएं ली जा रही हैं तथा तीन मोटर साईकिलें आर्यवीर दल को इस हेतु प्राप्त हो गई हैं, जिन्हें कार्यक्षेत्र में उतारा जा रहा है। इसी के साथ–साथ अगले पूरे वर्ष की कार्ययोजना को भी निश्चित कर लिया गया है तथा उसके अनुरूप सभी अधिकारियों की जिम्मेदारियां बांट दी गई हैं।

इस तरह से एक योजनाबद्ध रूप से आर्यवीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के कार्य को गतिमान करने वाला दिल्ली एक अग्रणी राज्य बना गया है।

दल द्वारा इस वर्ष 'विशेष शिक्षक योजना' को क्रियान्वित किया, जिसके अर्न्तगत सम्पूर्ण दिल्ली में 100 से अधिक शाखाएं लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस योजना पर कार्य करते हुए वर्त्तमान में 3 नए शिक्षकों श्री विजय आर्य, श्री धर्मवीर आर्य, श्री प्रेम आर्य की नियुक्ति की गयी। आर्यवीर दल के कार्यों को 'और अधिक गति देने' हेतु 3 नयी मोटरसाईकिलें श्री राजीव गुलाटी (एम.डी. एच.), आर्य समाज रोहिणी सेक्टर–7 तथा श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा) के द्वारा दिए गए आर्थिक सहयोग से क्रय की गयी। अधिवेशन के अवसर पर श्रीमती वीना आर्या, श्री संदीप आर्य एवं रोहिणी सेक्टर –7 के अधिकारियों ने इन मोटरसाइकिलों की चाभी दल के शिक्षकों को दे कर शाखा विस्तार के कार्यों का शुभारम्भ किया। दल द्वारा विभिन्न दानी महानुभावों के सहयोग से और अधिक शिक्षक नियुक्त करने तथा नयी मोटरसाइकिलें क्रय करने की योजना क्रियान्वयन में है।

साधारण सभा अधिवेशन

आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश का चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन 26 जुलाई, 2009 को आर्य समाज पश्चिमी पंजाबी बाग में संपन्न हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता दल के संरक्षक श्री रामजी लाल आर्य ने की।

अधिवेशन में दिल्ली की विभिन्न शाखाओं से 200 से अधिक आर्यवीरों,

योजनाबद्ध रूप से आर्यवीर दल के .....

अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना के साथ अधिवेशन की कार्यवाही प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य ने अपने उद्घाटन भाषण में पधारे हुए सभी का अभिनन्दन किया। तत्पश्चात् श्री सुन्दर आर्य (महामंत्री आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश) ने पिछले वर्ष की गतिविधियों को सभी के सम्मुख प्रस्तुत किया। उपस्थित लोगों ने दल द्वारा गत वर्ष किये गये कार्यों की करतल ध्वनि से प्रशंसा की।

तत्पश्चात् श्री जितेन्द्र भाटिया (कोषाध्यक्ष) ने वर्ष 2008–09 का आय–व्यय का विवरण सभी के समुख प्रस्तुत किया। साथ ही वर्ष 2009–2010 के प्रस्तावित बजट को भी प्रस्तुत किया गया।

तदुपरांत संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य जी द्वारा नई कार्यकारिणी तथा उपसंचालक, मंडल एवं उप–मंडल संचालक स्तर कि नियुक्तियां की गयीं। श्री जगबीर आर्य (सह–संचालक), श्री सुन्दर आर्य (महामन्त्री), श्री जितेन्द्र भाटिया (कोषाध्यक्ष), श्री बृहस्पति आर्य (संयोजक सेवा समिति), श्री विजेन्द्र आर्य (संयोजक आपदा प्रबंधन समिति),डॉ. रामचन्द्र शास्त्री (संयोजक विश्वविद्यालय संगठन समिति), श्री राजीव आर्य (संयोजक–विद्यालय संपर्क समिति), श्री ब्रिजेश आर्य (संयोजक गुरुकुल संपर्क समिति) नियुक्त किये गए।

अधिवेशन में आर्यसमाज सी–3 जनकपुरी, ए–1 जनकपुरी, सागरपुर, डी ब्लाक विकास पुरी, रोहिणी, कीर्तिनगर, मोहन गार्डन, पश्चिमी पंजाबी बाग, पूर्वी पंजाबी बाग के अधिकारियों ने विशेष रूप से भाग लिया। अधिवेशन को संबोधित करते हुए समाज के अधिकारियों ने आर्यवीर दल द्वारा किये जा रहे कार्यों की मुक्त कंठ से सराहना की तथा यह विश्वास दिलाया कि दल के कार्यक्रमों को और अधिक गति देने के लिए किसी भी प्रकार की सहायता अनेक आर्य समाजों द्वारा उपलब्ध कराई जायेगी।

आर्यवीर दल के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए दल को प्रदान की गई तीन मोटरसाइकिलों के साथ संरक्षक श्री रामजीलाल आर्य, श्री सुरेन्द्र आर्य एवं श्री राजीव आर्य। साथ में हैं आर्यवीरांगना दल एवं आर्यवीर दल दिल्ली के कार्यकर्ता।

सम्पूर्ण दिल्ली में दल के कार्यों को और अधिक गति से बढ़ाने हेतु क्षेत्रीय स्तर पर उपसंचालकों की नियुक्ति की गयी जिनमें श्री विरेश आर्य (उपसंचालक, पूर्वी दिल्ली), श्री रोहताश आर्य (उपसंचालक मध्य दिल्ली), श्री जगबीर आर्य (उपसंचालक–पश्चिमी दिल्ली), श्री धरमवीर आर्य (उपसंचालक, बाहरी दिल्ली) श्री संजय आर्य (उपसंचालक, उत्तरी दिल्ली), श्री वैभव आर्य (मंडल संचालक–दक्षिणी दिल्ली) नियुक्त किये गए।

आर्य वीरांगना दल की संचालिका श्रीमती वीना आर्या ने वीरांगना दल की गत वर्ष की गतिविधियों को सभी के सम्मुख प्रस्तुत किया। वीरांगना दल द्वारा वर्त्तमान में किये गए कार्यों एवं निरंतर बढ़ती शाखाओं की सभी ने प्रशंसा की।

तदुपरांत आर्य वीरांगना दल ने वर्ष 2008–09 का आय–व्यय का विवरण प्रस्तुत किया।

श्रीमती शारदा ने आर्य वीरांगना दल की नव नियुक्त अधिकारियों की घोषणा की। जिनमें श्रीमती विभा आर्या (महामंत्राणी), श्रीमती स्नेह भाटिया, शारदा आर्या (सह संचालिका), श्रीमती पुष्पा महावर (कोषाध्यक्ष), आस्था सिंघल (सह कोषाध्यक्ष), श्रीमती सुनीति आर्या (बौद्धिकाध्यक्ष), श्रीमती निर्मल कर्मवीर (सह बोद्धिकाध्यक्ष), मनीषा आर्या (प्रधान शिक्षिका), श्रुति, हविषा, संगीता, नविता (सह प्रधान शिक्षिका), सीमा आर्या (उप मंत्राणी, संगठन), श्रीमती अंजू आर्या (उप मंत्राणी–प्रचार), लीपिका आर्या (उप मंत्राणी–बोद्धिक) अंजू आर्या–रोहिणी (उप मंत्राणी–व्यवस्था) को नियुक्त किया गया। अधिवेशन के मध्य सभी उप संचालकों, मंडल संचालकों द्वारा अपने क्षेत्र की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया गया। इन गतिविधियों ी जानकारी पाकर यह स्पष्ट था कि क्षेत्रीय स्तर शाखानायकों द्वारा दल के कार्य पूरी गंभीरता एवं रोचकता से किए जा रहे हैं। साथ ही क्षेत्रीय स्तर पर नवीन कार्यक्रमों की योजना के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि नए अर्यावीर भविष्य में दल के कार्यों को पूरी लगन से करने हेतु कृतसंकल्प हैं। समिति के अधिकारियों ने भी अपनी योजनाओं के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में दल के कार्यों के प्रचार की कार्यप्रणाली प्रस्तुत की।

अधिवेशन के अंत में विचार सत्र के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने दल के कार्यों को और अधिक बेहतर बनाने के विषय में अपने सुझाव प्रस्तुत किये। जिस उत्साह एवं तन्मयता से सभी ने अधिवेशन में भाग लिया, उससे निश्चित ही स्पष्ट था कि नयी टीम अपनी जिम्मेदारियों को लेकर पूरी तरह गंभीर है। अधिवेशन के अंत में संचालक श्री वीरेन्द्र आर्य ने सभी का धन्यवाद प्रकट किया। उन्होंने विभिन्न समाजों के अधिकारियों का भी आभार प्रकट किया, जो विभिन्न स्थानों से अधिवेशन में भाग लेने उपस्थित हुए थे। उन्होंने विशेष रूप से पश्चिमी पंजाबी बाग आर्य समाज का आभार प्रकट किया, जिन्होंने अधिवेशन हेतु विशेष व्यवस्था उपलब्ध कराई। साथ ही समाज द्वारा की गयी सुन्दर व्यवस्था की सभी ने हृदय से प्रशंसा की।

– सुन्दर आर्य, महामन्त्री

125वें निर्वाण वर्ष पर आयोजित आर्य प्रतिनिधि सभाओं के आयोजन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज परली बैजनाथ, जिला बीड (महा.) का

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

30सितम्बर से 1 अक्तूबर 2009 : औरंगाबाद

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर सम्मेलन को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

–: निवेदक :–

स्वामी श्रद्धानन्द (प्रधान)

आचार्य शिवमुनि (मन्त्री)

दिल्ली चलो! दिल्ली चलो!! दिल्ली चलो!!!

विश्व की समस्त आर्यसमाजों, एवं आर्य प्रतिनिधि सभाओं की शिरोमणि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर

शताब्दी अधिवेशन एवं महासम्मेलन

29-30 अगस्त, 2009 (शनिवार-रविवार)

रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली

प्रमुख कार्यक्रम

शनिवार दिनांक 29 अगस्त, 2009

- ★ कार्यकारिणी बैठक
- ★ अन्तरंग सभा बैठक
- ★ सार्वदेशिक शताब्दी साधारण अधिवेशन
- ★ विशाल भजन संध्या

रविवार दिनांक 30 अगस्त, 2009

- ★ ऋग्वेद शतक महायज्ञ
- ★ ध्वजारोहण

★सार्वदेशिक सभा शताब्दी महासम्मेलन ★

इस अवसर पर विभिन्न संगठनात्मक विषयों पर गोष्ठियां एवं चर्चाएं भी होंगी।

आप सब अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

-: निवेदक :-

कैप्टन देवरत्न आर्य	**आनन्दकुमार आर्य**	**अनिल तनेजा**	**प्रकाश आर्य**	**ब्र. राजसिंह आर्य**
सभाप्रधान	कार्यकारी प्रधान	कोषाध्यक्ष	सभामन्त्री	प्रधान, दिल्ली सभा
राधाकृष्ण वर्मा	**सुरेशचन्द्र अग्रवाल**	**आचार्य बलदेव**	**सोमदत्त महाजन**	**धर्मपाल आर्य**
उप प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, कैम्प कार्यालय - 15, हनुमान रोड नई दिल्ली-110001

स्वामी श्रद्धानन्द	**स्वामी सुमेधानन्द**	**दलबीरसिंह राघव**	**आचार्य दयासागर**	**सत्यवीर शास्त्री**	**भारतभूषण गुप्ता**
महाराष्ट्र	हिमाचल	मध्य भारत	छत्तीसगढ़	मध्य विदर्भ	जम्मू-कश्मीर
विजय सिंह 'भाटी'	**लक्ष्मण यादव**	**देवेन्द्रपाल सिंह यादव**	**आचार्य रघुमन्ना**	**गंगा प्रसाद आर्य**	**मिठाई लाल सिंह**
राजस्थान	झारखंड	उत्तर प्रदेश	आन्ध्र प्रदेश	बिहार	मुम्बई
सुदर्शन शर्मा	**देवराज आर्य**	**हंसराज आर्य**	**विशिकेशन शास्त्री**	**ज्ञान प्रकाश चोपड़ा**	
पंजाब	उत्तराखण्ड	आसाम	उड़ीसा	प्रादेशिक सभा	

प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माननीय प्रधान

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

27 जुलाई, 2009 से 2 अगस्त, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक ३०/३१-०७-२००९

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११

आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

विद्यालयों के बच्चों को पढ़ाइए

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र

आपके बच्चों को मिल सकते हैं

5,00,000 रु० से अधिक के इनाम

भारत में कहीं भी 500 से अधिक प्रतियां मंगाने पर कोई डाक व्यय नहीं

योजना केवल 31 अगस्त, 09 तक मान्य

दिल्ली सभा कार्यालय - 15, हनुमान रोड नई दिल्ली : मूल्य मात्र 12/-

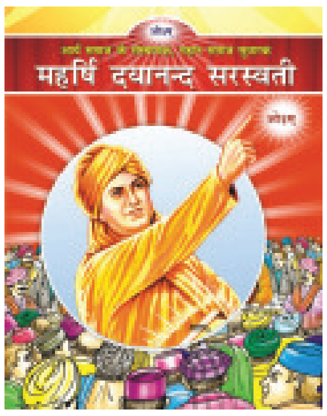

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने एवं परिवार के साथ जोड़ने के लिए तैयार कराई गई है कॉमिक्स। ये कॉमिक्स हिन्दी में तैयार कराई गई हैं।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र को बच्चों तक पहुंचाने के लिए यह एक सुविचारित योजना है। इनको बच्चों तक पहुंचाने के लिए कुछ सुझाव निम्न हैं :-

1. आर्यसमाज के आयोजनों पर बच्चों को नि:शुल्क वितरण करें। 2. निकटवर्ती विद्यालयों में जाकर इस योजना के बारे मे बताएं तथा उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित करें। 3. अपने पारिवारिक उत्सवों के अवसर पर जैसे - बच्चों का जन्मदिन, विवाह, वर्षगांठ के अवसर पर आने वाले बच्चों को भेंट करें। 4. बच्चों की प्रतियोगिताएं आयोजित करवाकर पुरस्कार के रूप में इनका वितरण करें। 5. जो आर्यसमाज के विद्यालय संचालित कर रहे हैं, वे प्रत्येक बच्चे तक इस कॉमिक्स को अवश्य ही पहुंचाएं। 6. सैम्पल मंगाने के लिए आज ही लिखें। सैम्पल वीपीपी द्वारा भेजे जाएंगे। मूल्य : 12 रुपये मात्र

विशेष नोट :

आवश्यक नहीं कि इनामों के लिए प्रविष्टियां अलग-अलग भेजी जाएं। आप चाहें तो कई प्रविष्टियां एक साथ भेज सकते हैं।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : सुशील महाजन   सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर